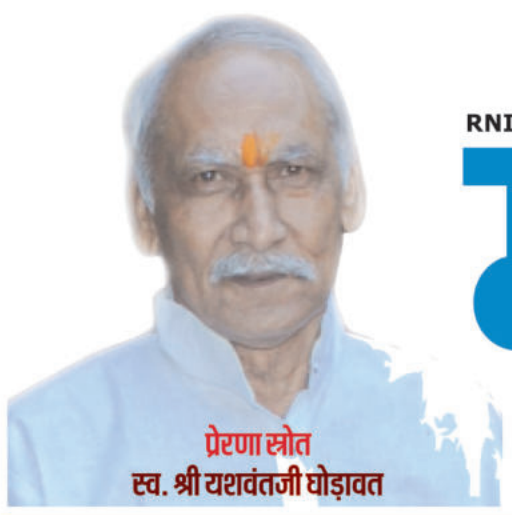

RNI No. MPHIN/2018/76422

बेबाकी के साथ...सच

माही की गूंज

Www.mahikigunj.in, Email-mahikigunj@gmail.com

सुविचार

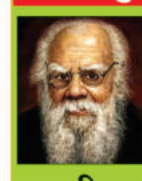

अनपढ़ होना उतनी बुरी बात नहीं है लेकिन पढ़ा लिखा होकर भी अंधविश्वासी, पाखंडी और मुर्ख होना बड़ा ही चिंता का विषय है।

परियार ई वी रामासामी

वर्ष-06, अंक - 37 (साप्ताहिक) खवासा, गुरुवार 06 जून 2024 पृष्ठ-8, मूल्य -5 रुपए

अबकी बार... मजबूत विपक्ष वाली सरकार

माही की गूंज, संजय भटेवरा।

झाबुआ। किसी कार्य को लेकर आत्मविश्वास होना अच्छी बात है, लेकिन जब यह आत्मविश्वास अति आत्मविश्वास में बदल जाता है तो अहंकार का रूप ले लेता है और कहते हैं कि, अहंकार तो स्वयं भगवान का भी टूट जाता है।

पिछले कुछ चुनाव में भाजपा ने सीटें तय करके आंकड़े संबंधी नारे जारी किए थे, लेकिन उन नारों का हश्र भी ठीक वैसा ही हुआ था, जो अबकी बार 400 पार... नारे का हुआ है।

बंगाल चुनाव व 2018 के मध्यप्रदेश विधानसभा चुनाव में भी भाजपा ने अबकी बार 200 पर का नारा दिया था, लेकिन दोनों ही जगह सरकार भी नहीं बन पाई थी। 2024 के आम चुनाव में भाजपा के नारे ÷अबकी बार 400 पार÷ वाली बात तो सही नहीं हुई बमुश्किल सरकार अवश्य बन रही है, वह भी सहयोगी दलों की बैसाखी पर। आम जनता ने एक बार फिर यह साबित कर दिया कि, वह किसी पर भी आंख मूंद कर भरोसा नहीं कर सकती और यही भारतीय लोकतंत्र की खूबी भी है। चारों ओर मोदी की गारंटी और 400 पार के नारे के बीच आम जनता ने अपना फैसला सुनाया है कि अबकी बार मजबूत विपक्ष वाली सरकार देश में होगी।

खटाखट और गारंटी का संतुलन बनाया

राहुल गांधी के खटाखट और मोदी के बीच गारंटी का आकलन करने के पश्चात जनता ने अपना संतुलित फैसला सुनाया है। जिसमें न तो आंख मूंद कर गारंटी पर भरोसा जताया है और ना ही खटाखट वाली बात को नजरअंदाज किया है, बल्कि गारंटी पर खटाखट का पहरा बिठा दिया है। भारतीय लोकतंत्र सामूहिक निर्णयों पर चलता है और जब जब लोकतंत्र पर व्यक्तिवाद मे हावि होने की कोशिश की है तो आम जनता ने उनको आईना दिखाया है। इतिहास में इंदिरा गांधी को भी हार का मुंह देखना पड़ा था। हालांकि वर्तमान में एनडीए की भी सरकार तीसरी बार बनने अवश्य जा रही है। लेकिन जनता ने भाजपा की अपेक्षा अनुसार सीटें नहीं दी है। शायद इसलिए परिणाम वाले दिन भर भाजपा की जीत से ज्यादा उत्तरप्रदेश में इंडिया गठबंधन के बेहतर प्रदर्शन पर चर्चा हुई। अखिलेश की साइकिल और हाथ के पंजे का गठजोड़, उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री आदित्यनाथ के बुलडोजर पर भी भारी पड़ा और भाजपा के 400 पार वाले नारे की भी हवा उत्तरप्रदेश की जनता ने ही निकाल दी।

पार्टी से बड़ा व्यक्ति नहीं

इस चुनाव में भारतीय मतदाताओं ने एक बार फिर साबित कर दिया कि, कोई भी व्यक्ति पार्टी से बड़ा नहीं हो सकता है। निःसंदेह वर्तमान दौर में नरेंद्र मोदी भारतीय राजनीति का चमकता सितारा है तथा पूरे देश में जाना पहचाना नाम है। कई उम्मीदवार केवल मोदी के नाम से ही जीत कर आए हैं, लेकिन फिर भी मोदी, भाजपा को 400 सीटें नहीं दिला पाए। कार्यकर्ता केवल 400 पार का नारा लगाते रहे। प्रचार के लिए न तो घर से निकले और न ही जनता के दर्द को समझा, केवल नारे के सहारे जमीनी हकीकत से दूर रहे। कुछ ऐसे नारों का हश्र 2004 के चुनाव में इंडिया शाईनिंग और फील गुड का हुआ था जब भाजपा के नेतृत्व वाली अटल बिहारी वाजपेई सरकार ने समय से पूर्व चुनाव करवाने का फैसला लिया था और फील गुड और इंडिया शाईनिंग जैसे हवा हवाई नारों के सहारे चुनाव लड़ा था और आम जनता ने तब भी भाजपा को जमीनी हकीकत दिखलाकर सत्ता को बेदखल कर दिया था। वर्तमान में सत्ता को एनडीए की रहना तय है। लेकिन सरकार को बिना राय मशवरे के निर्णय लेना कठिन होगा, हर मुद्दे पर सरकार के सहयोगी दलों के साथ ही विपक्षी नेताओं को भी विश्वास में लेना होगा।

आगे क्या.....?

निःसंदेह इस चुनाव में आम जनता ने देश की सबसे पुरानी पार्टी को नई शक्ति और संजीवनी दी है, जिसके बल पर कांग्रेस मुक्त भारत का सपना देखने वालों की नींद भी आम जनता ने उड़ा दी है। राहुल गांधी एक परिपक्व नेता के रूप में विपक्षी की सशक्त आवाज बनेंगे। वहीं अन्य क्षत्रिय दलों को भी अपनी खोई हुई जमीन मिल गई है। जिसके बलबूते वे राष्ट्रीय राजनीति और प्रदेश में अपनी बात रख सकेंगे। आम जनता ने दल बदलू और पार्टी के साथ दगा करने वाले को नकार दिया है। महाराष्ट्र में उद्धव ठाकरे और शरद पवार गुट की नई ऊर्जा मिली है। वही उत्तरप्रदेश में अखिलेश यादव, पश्चिम बंगाल में ममता बनर्जी ने खुद को साबित किया है। चुनाव परिणाम के पूर्व ही कड़े फैसले लेने का इरादा रखने वाले प्रधानमंत्री मोदी को भी हर फैसले पर अपने सहयोगियों से राय लेना अब जरूरी होगा। प्रदेश की राजनीति के साथ ही राष्ट्रीय राजनीति में भी नीतीश कुमार और चंद्रबाबू नायडू का दखल बड़ेगा।

राम मंदिर का कितना असर...

अयोध्या में श्री राम मंदिर की प्रतिष्ठा के बाद हुए चुनाव में अयोध्या सीट हार जाना भाजपा के लिए किसी सदमे से कम नहीं है। श्री राम मंदिर पूरे देश की आस्था का केंद्र बिंदु है। लेकिन आम जनता ने राम मंदिर के साथ ही स्थानीय मुद्दों को भी प्राथमिकता दी है। लोगों ने स्थानीय समस्याओं, स्थानीय नेताओं, रोजगार, शिक्षा व स्वास्थ्य जैसे मुद्दों को भी ध्यान में रखकर वोट किया है। आजादी के अमृतकाल में हुए इस चुनाव में भारतीय मतदाताओं ने परिपक्वता के साथ लोकतंत्र में अपनी जिम्मेदारी निभाई है।

ईवीएम निर्दोश...

पूरे चुनाव परिणाम में एक बात निकलकर सामने आई कि, चुनाव जीतने पर भाजपा खुश..., सीटें बढ़ने पर कांग्रेस भी खुश..., भाजपा को 400 पार न जाने के कारण विपक्षी अन्य पार्टियां भी खुश... यानी कोई जीत कर खुश तो कोई अपने प्रदर्शन पर खुश... और कोई किसी को रोक कर खुश... तो इन सब की खुशी के बीच एक बात सामने निकल कर आई कि, इस बार चुनाव में ईवीएम पूरी तरह निष्पक्ष रही। कहीं कोई गड़बड़ी नहीं हुई और चुनाव आयोग ने भी अपनी जिम्मेदारी पूरी ईमानदारी से निभाई, कोई पक्षपात या ईवीएम हैकिंग के आरोप नहीं लगे जो अपने आप में एक बड़ी बात है। यानी ईवीएम अपनी अग्नि परीक्षा में सफल रही।

बहरहाल चुनावी नतीजे के बाद देश में बनने वाली सरकार से आम लोगों को उम्मीद रहेगी कि, वह देश के हित में निर्णय ले। शिक्षा, स्वास्थ्य और बेरोजगारी की जमीनी हकीकत को समझें और उनके निराकरण के लिए उचित निर्णय ले। साथ ही विपक्षी भी अपनी जिम्मेदारी को ईमानदारी से निर्वहन करें। क्योंकि एक मजबूत लोकतंत्र में एक मजबूत विपक्ष का होना आवश्यक है। एकतरफा बहुमत तानाशाही को जन्म देता है और भारतीय जनता तानाशाही नहीं चाहती है। सरकार की निगरानी के लिए उन्होंने मजबूत विपक्ष को बिठाया है साथ ही आम जनता को यह उम्मीद रहेगी कि, अगले 5 साल तक राजनेता पक्ष विपक्ष को भुलाकर देश हित में निर्णय ले। चुनावी कटाक्ष व्यानबाजी को, चुनाव तक ही सीमित रखकर नए भारत का संकल्प पूर्ण करे। साथ ही सरकार को सकारात्मक मुद्दों पर विपक्ष सहयोग कर देश को नई ऊंचाइयों पर ले जाने का प्रयास करें।

लोकसभा चुनाव के नतीजों के बाद राष्ट्रपति से मिले पीएम मोदी, सौंपा इस्तीफा

नई दिल्ली, एजेंसी।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अलगी भाजपा के नेतृत्व वाली एनडीए सरकार के गठन से पहले अपने मंत्रिपरिषद के साथ राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू को अपना भी इस्तीफा सौंप दिया है। इससे 2014 से 2019 तक चलने वाली 17वीं लोकसभा को भंग करने का रास्ता साफ हो जाएगा। राष्ट्रपति ने इस्तीफा स्वीकार कर लिया और प्रधानमंत्री मोदी और मंत्रिपरिषद से अनुरोध किया कि वे नई सरकार के कार्यभार संभालने तक पद पर बने रहें। बुधवार को राष्ट्रीय राजधानी में हुई कैबिनेट बैठक के बाद यह फैसला लिया गया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में हुई बैठक में मंत्रिमंडल को भंग करने की सिफारिश की गई, जिसका कार्यकाल 16 जून को समाप्त हो रहा है।

भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के नेतृत्व वाले राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) सरकार का गठन और पीएम मोदी का शपथ ग्रहण समारोह 8 जून को होने की संभावना है। जेडीयू और टीडीपी, दोनों एनडीए सरकार का समर्थन कर सकते हैं। दोनों दलों द्वारा बाद में होने वाली गठबंधन की बैठक के दौरान भाजपा को समर्थन के औपचारिक पत्र सौंपे जाने की उम्मीद है। सूत्रों ने बताया कि, भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के नेतृत्व वाले राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) के नवनिर्वाचित सांसदों की बैठक 7 जून को राष्ट्रीय राजधानी में होगी। सूत्रों के अनुसार, एनडीए द्वारा सरकार गठन पर चर्चा की जाएगी। लोकसभा चुनाव के परिणामों के अनुसार, भारत के चुनाव आयोग ने 543 लोकसभा क्षेत्रों में से 542 के परिणाम घोषित किए हैं, जिसमें भाजपा ने 240 सीटें और कांग्रेस ने 99 सीटें जीती हैं।

इस बार भाजपा की जीत की संख्या 2019 की 303 सीटों और 2014 में जीती गई 282 सीटों से काफी कम है। दूसरी ओर, कांग्रेस ने 2019 में 52 और 2014 में 44 सीटों की तुलना में 99 सीटें जीतकर मजबूत बढ़ोतरी की है। इंडिया ब्लॉक ने कड़ी टक्कर देते हुए और एग्जिट पोल की सभी भविष्यवाणियों को झुठलाते हुए 230 का आंकड़ा पार कर लिया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने तीसरा कार्यकाल हासिल कर लिया है, लेकिन भाजपा को अपने गठबंधन में अन्य दलों जेडी (यू) प्रमुख नीतीश कुमार और टीडीपी के प्रमुख चंद्रबाबू नायडू के समर्थन पर निर्भर रहना होगा। 2024 के लोकसभा चुनावों में डाले गए मतों की गिनती के बाद भाजपा 272 बहुमत के आंकड़े से 32 सीटें पीछे रह गई।

2014 में भारतीय जनता पार्टी के सत्ता में आने के बाद पहली बार, उसने अपने दम पर बहुमत हासिल नहीं किया। इस बीच, विपक्षी दल इंडिया ब्लॉक ने भी बुधवार को बैठक की, जिसमें कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने गठबंधन नेताओं को अपने घर पर बैठक के लिए बुलाया था। लोकसभा चुनावों में अनुकूल परिणाम देखने के बाद, इंडिया ब्लॉक के नेता अपने अगले कदम की रणनीति बनाएंगे।

किंगमेकर नीतीश की डिमांड

नई दिल्ली, एजेंसी।

लोकसभा चुनाव में 12 सीटें जीतने के बाद और भाजपा के अकेले बहुमत से चूकने के बाद सत्तारूढ़ एनडीए के एक मजबूत सहयोगी के रूप में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार का कद बढ़ गया है। कहा जा रहा है कि जेडी(यू) के दिग्गज नेता राज्य के विकास के एजेंडे के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ कड़ी सौदेबाजी करने के मूड में हैं। जेडी(यू) के शीर्ष सूत्रों के मुताबिक, उनकी सूची में केंद्रीय मंत्रिमंडल में अधिक मंत्री पद, केंद्रीय कोष, बिहार में जल्द विधानसभा चुनाव और बिहार के लिए विशेष राज्य का दर्जा शामिल है। ऐसे संकेत हैं कि सीएम नीतीश कुमार, जो जेडी(यू) के राष्ट्रीय अध्यक्ष भी हैं, भाजपा के नेतृत्व वाली एनडीए सरकार के गठन में 'प्रमुख सहयोगी' के रूप में अपनी नई स्थिति के बाद अब कम से कम 4 से 5 कैबिनेट मंत्री पद की उम्मीद कर रहे हैं।

कम से कम तीन कैबिनेट मंत्री पद का वादा

सूत्रों के हवाले से खबर है कि, नतीजों के आने से पहले जेडी(यू) को केंद्रीय मंत्रिमंडल में कम से कम तीन कैबिनेट मंत्री पद और राज्य मंत्री के स्तर का एक मंत्री पद देने का वादा किया गया था। जेडी(यू) के एक वरिष्ठ नेता ने नाम न बताने की शर्त पर कहा, यह स्पष्ट है कि जेडी(यू) बड़े सौदेबाजी की स्थिति में है। इसलिए, हम कम से कम चार कैबिनेट रैंक के मंत्री पद पाने की उम्मीद कर रहे हैं। एक और एमओएस रैंक के मंत्री पद के लिए कहा जा सकता है। उन्होंने कहा कि, पार्टी का शीर्ष नेतृत्व रेलवे, ग्रामीण विकास, जल संसाधन जैसे विभागों के लिए उत्सुक है, क्योंकि ये विभाग पार्टी को बिहार के लिए परियोजनाएं प्राप्त करने में मदद करेंगे और राज्य में बुनियादी ढांचे के विकास को भी बढ़ावा देंगे।

बिहार में जल्द हो विधानसभा चुनाव

इसके अलावा सीएम नीतीश कुमार जेडी(यू) एनडीए के पक्ष में अनुकूल माहौल का लाभ उठाने के लिए राज्य में जल्दी विधानसभा चुनाव कराने के लिए भी उत्सुक हैं। लोकसभा चुनावों के परिणामों से स्पष्ट है कि वे इस वक्त बिहार में मजबूत स्थिति में हैं। भाजपा-जेडी(यू), एलजेपी(आरवी) और एचएएम ने मिलकर 30 सीटें जीती हैं। सीएम के करीबी माने जाने वाले जेडी(यू) के एक नेता ने कहा, विचार यह है कि बिहार में मतदाताओं के बीच जेडी(यू) और एनडीए के लिए अनुकूल माहौल का लाभ उठाने के लिए छह महीने में जल्दी चुनाव कराए जाएं। भाजपा और उसके अन्य सहयोगियों को इस पर सहमत होना होगा। लेकिन हम इसके लिए पूरी कोशिश करेंगे। मौजूदा राज्य विधानसभा का कार्यकाल नवंबर 2025 को समाप्त होगा। बिहार में पिछला विधानसभा चुनाव अक्टूबर-नवंबर, 2020 में हुआ था, जिसमें जेडी(यू) ने 43 सीटें जीती थीं, जबकि भाजपा को 74 सीटें मिली थीं।

केंद्र से अधिक सहायता राशि की मांग

नीतीश कुमार की इच्छा सूची में एक और बड़ी मांग है। वह 2023 में किए गए जाति आधारित सामाजिक आर्थिक सर्वेक्षण में पहचाने गए गरीब पृष्ठभूमि के 94 लाख परिवारों को किश्तों में 2 लाख रुपये की वित्तीय सहायता देने की महत्वाकांक्षी योजना को भी धरातल पर उतारना चाहते हैं। इसे सुचारू रूप से चलाने के लिए केंद्र से सहायता राशि की मांग भी करेंगे। इस साल फरवरी की शुरुआत में, नीतीश कुमार ने जाति आधारित सर्वेक्षण में गरीब के रूप में पहचाने गए प्रत्येक परिवार को 2 लाख रुपये की वित्तीय सहायता प्रदान करने के लिए बिहार लघु उद्यमी योजना शुरू की थी। नवंबर 2023 में जाति आधारित आरक्षण रिपोर्ट जारी होने के बाद राज्य मंत्रिमंडल ने इस योजना को वित्तपोषित करने के लिए अगले पांच वर्षों के लिए 2.5 लाख करोड़ रुपये आवंटित करने के प्रस्ताव को मंजूरी दी थी और बिहार को विशेष दर्जा देने के लिए केंद्र को अनुरोध भेजने के प्रस्ताव को भी मंजूरी दी थी।

विशेष राज्य का दर्जा

जेडी(यू) के वरिष्ठ नेता केसी त्यागी ने भी कहा है कि, पार्टी केंद्र से बिहार के लिए विशेष दर्जा की मांग कर रही है और इस मांग को और मजबूती से आगे बढ़ा रही है, क्योंकि अब जेडी(यू) केंद्र की सरकार में एक प्रमुख सहयोगी है। उन्होंने कहा, हम चाहते हैं कि बिहार को विशेष दर्जा मिले और हम इसके लिए प्रयास करेंगे। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि जेडी(यू) एनडीए में सहयोगी है और आगे भी सहयोगी रहेगी। उन्होंने इस बात को भी खारिज किया कि मुख्यमंत्री कुमार फिर से भारत ब्लॉक में शामिल होने पर विचार कर सकते हैं। एनडीए के सूत्रों ने यह भी कहा कि जेडी(यू) बिहार के लिए अधिक धनराशि के विकेंद्रीकरण और राज्य के विकास के लिए अन्य मांगों पर सौदेबाजी करेगी।

हार पर मंथन करेगी कांग्रेस

भोपाल। मध्य प्रदेश में लोकसभा चुनाव में भाजपा को क्लीन स्वीप थमा चुकी कांग्रेस अब हार के कारणों से गुत्थम गुत्था हो रही है। पीसीसी चीफ जीतू पटवारी ने बैठक बुलाई है। इस बैठक में कांग्रेस नेताओं से बातचीत कर वे रिपोर्ट तैयार करेंगे और पार्टी हाईकमान को सौंपेंगे।

दरअसल, चुनाव से पहले कांग्रेस की ओर से कम से कम आधी सीटें जीतने का दावा किया जा रहा था। पार्टी हाईकामन को बड़े नेताओं से जीत की उम्मीदें थी, युवा टीम के हाथ प्रदेश की कमान सौंपी गई थी। लेकिन, इसके बाद भी करारी हार का सामना पार्टी को करना पड़ा। ऐसा क्यों हुआ अब इसे लेकर प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी ने बैठक बुलाई है। इस मंथन बैठक में हार के कारणों पर चर्चा की जाएगी।

सूत्रों का कहना है कि, बैठक में कमलनाथ, दिग्विजय सिंह, कांतिलाल भूरिया जैसे सीनियर नेताओं की हार पर भी चर्चा होगी। इस बात पर भी मंथन होगा कि ऐन चुनाव के दौरान हुई टूट-फूट और नेताओं की पलायन नीति ने पार्टी को कितना नुकसान पहुंचाया है। पीसीसी चीफ इस बैठक में जमीनी कार्यकर्ताओं और क्षेत्रीय नेताओं के प्रदर्शन पर भी जवाब मांगेंगे। इस बैठक से निकले बिंदुओं के आधार पर एक रिपोर्ट तैयार की जाएगी। यह रिपोर्ट ऑल इंडिया कांग्रेस कमेटी को सौंपी जाना है।

तय नहीं बड़े नेताओं की आमद

सूत्रों का कहना है कि पीसीसी चीफ जीतू पटवारी द्वारा बुलाई गई इस बैठक में पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह और कमलनाथ शामिल होंगे या नहीं, यह तय नहीं हुआ है। कहा जा रहा है कि दोनों नेता दिल्ली में चल रहे घटनाक्रम पर अपनी सहभागिता दर्शाने संभवतः दिल्ली कूच कर गए हैं। इसके चलते ये बैठक से दूर रह सकते हैं।

बदलेगी पीसीसी की तस्वीर

लोकसभा चुनाव के पहले पार्टी से पलायन कर गए कांग्रेस नेताओं के कारण प्रदेशभर में एक खालीपन के हालात बने हैं। कई विधायक, पदाधिकारी और वरिष्ठ कार्यकर्ताओं के पार्टी से बाहर निकल जाने के बाद इन जिलों में नई टीम बनना है। इधर, चुनाव के दौरान सक्रिय नहीं दिखने वाले नेताओं और भीतरघात के हालात बनाने वाले भी पीसीसी के रडार पर हैं। चुनाव नतीजों के बाद बने हालात को देखते हुए अब पीसीसी टीम में नए सिरे से फेरबदल की उम्मीदें बढ़ गई हैं।

60 की स्पीड वाली तूफानी हवाएं, बारिश-ओले पड़ने का ऑरेंज अलर्ट

भोपाल। मध्य प्रदेश में मौसम का बड़ा उलटफेर होने वाला है। आईएमडी ने अगले चार दिनों तक मौसम के खराब रहने का पूर्वानुमान जताया है। मौसम विभाग के मुताबिक, अगले 4 दिनों के दौरान प्रदेश के विभिन्न हिस्सों में गरज, चमक और तेज हवाओं के साथ छिटपुट हल्की से मध्यम बारिश होने की संभावना है। खासतौर पर 6 और 7 जून को दक्षिणी प्रदेश में कुछ स्थानों पर ओलावृष्टि और तूफानी हवाएं चलने की संभावना है। इस दौरान हवा की स्पीड 50 से 60 किलोमीटर प्रति घंटे रहेगी।

दक्षिण-पश्चिम मानसून के आगे बढ़ने के लिए परिस्थितियां अनुकूल होती जा रही हैं। पूर्वी उत्तर प्रदेश, उससे सटे बिहार, उत्तर हरियाणा और उत्तर-पूर्व असम पर साइक्लोनिक सर्कुलेशन एक्टिव हैं। इन वेदर सिस्टम के प्रभाव से प्रदेश में भी बारिश की गतिविधियों के लिए माहौल अनुकूल है। खासतौर पर छह और सात जून को प्रदेश में आंधी, बारिश और ओले पड़ने को लेकर ऑरेंज अलर्ट जारी किया गया है। इसके बाद सूबे में फिर से भीषण गर्मी पड़ने के आसार हैं।

मौसम विभाग की जानकारी के मुताबिक, आने वाले दिनों में भोपाल, विदिशा, सिहार, नर्मदापुरम, बैतूल, हरदा, बुरहानपुर, खंडवा, खरगौन, बड़वानी, धार, इंदौर, देवास, छिंदवाड़ा, सिवनी और सागर जिलों के विभिन्न हिस्सों में 50 से 60 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से तूफानी हवाओं के साथ जोरदार बारिश की संभावना है। इस दौरान इन जिलों के कुछ हिस्सों में ओले गिरने की आशंका भी है। इसको लेकर ऑरेंज अलर्ट जारी किया गया है।

मौसम विभाग के मुताबिक, छह जून को प्रदेश के नर्मदापुरम, बैतूल, हरदा, बुरहानपुर, खंडवा, खरगौन, बड़वानी में तेज हवाओं और गरज चमक के साथ हल्की से मध्यम बारिश की संभावना है। इस दौरान इन जिलों के कुछ हिस्सों में ओले भी पड़ सकते हैं। इसको लेकर ऑरेंज अलर्ट जारी किया गया है। भोपाल, विदिशा, सिहोर, नर्मदापुरम, धार, इंदौर, देवास, शाजापुर, गुना, शिवपुरी, ग्वालियर, अनुपुर और शहडोल में हल्की से मध्यम बारिश का यलो अलर्ट जारी किया गया है।

भूरिया की हार को नहीं रोक पाए निजी आरोप-प्रत्यारोप

विक्रांत का दाव नही चल पाया विधानसभा की तरह लोकसभा में

माही की गूंज, झाबुआ।

2024 का लोकसभा चुनावी समर शांत हो चुका है। रतलाम-झाबुआ संसदीय सीट पर कांग्रेस को करारी हार तो भाजपा को प्रचंड जीत मिली है। लोकसभा 2024 के इन चुनावों ने अच्छे-बुरे कई रंग बिखेरे। चुनावी जीत-हार के लिए बहुत ही बदजुबानिया हुई। एक-दूसरे पर कई आरोप-प्रत्यारोप लगाए। राजनीति से हटकर यह चुनावी लड़ाई निजी आरोप-प्रत्यारोपों तक पहुंची। मगर चुनावी नतीजों ने इस तरह की राजनीति को सिरे से नकार दिया।

2024 के लोकसभा चुनावों में खूब जुबानी जंग चली और इस जुबानी जंग ने सारी मर्यादा की सीमाएं लांघ दी। निपटने-निपटाने, भुगतने तक की धमकियां चुनावी प्रचार में सुनाई दी तो डाकू, बदमाश, माफिया जैसे शब्दों ने भी चुनावी रण में अपनी जगह बनाई। मुद्दों से हटकर निजी जुबानी हमलों तक यह चुनाव पहुंचा। मगर इन सब का कोई फायदा किसी को कहीं दिखाई पड़ता नजर नहीं आया।

कांतिलाल भूरिया व उनके बेटे झाबुआ विधायक विक्रांत भूरिया ने जिस तरह से विधानसभा चुनावों को निजी आरोपों-प्रत्यारोपों के साथ जीता था। उसी तरीके से झाबुआ विधायक डॉ. विक्रांत भूरिया अपने पिता कांतिलाल भूरिया की लोकसभा चुनावों में नैया पार करवाने निकले थे। 2024 के लोकसभा चुनावों में ऐसा प्रतीत हो रहा था मानों कांग्रेस की ओर से कांतिलाल प्रत्याशी न होकर विक्रांत भूरिया प्रत्याशी हो। अपने पिता के लिए युवा प्रदेश कांग्रेसाध्यक्ष पद छोड़ विक्रांत पूरी तरह से अपने पिता कांतिलाल भूरिया को लोकसभा जिताने के लिए मैदान में उतरे थे। विक्रांत ने अपने पिता के इस लोकसभा चुनाव में भी वही तरीका अपनाया जैसा उन्होने विधानसभा चुनावों में अपने लिए अपनाया था। पिछले विधानसभा चुनावों में विक्रांत भूरिया ने खुले तौर पर अपने प्रतिद्वंदी व उनके परिवार पर निजी हमले किए थे। विधानसभा भाजपा प्रत्याशी भानू भूरिया व उनके परिवार पर कई तरह के आरोप लगाए थे। विक्रांत ने उन्हे गुंडा और शराब माफिया तक कह डाला था। विक्रांत विधानसभा चुनाव जीत कर कांग्रेस से झाबुआ विधायक बन गए। हालांकि यह नहीं कहा जा सकता कि, अपने प्रतिद्वंदी पर निजी आरोप-प्रत्यारोप कर दिए। इस क्रम में विक्रांत भूरिया ने इतनी प्रेसवार्ता की कि, खुद कांतिलाल भूरिया ने इस लोकसभा चुनाव को जीतने के लिए नही की होगी। चुनावी प्रचार के दौरान जैसे मानों विक्रांत ही प्रमुख चेहरा नजर आ रहे थे। आए दिन अनीता नागरसिंह चौहान के किसी न किसी निजी मामले को वे प्रेसवार्ता कर सामने रखते रहे। उन्होने नागरसिंह चौहान को खुलकर गुंडा और माफिया बताया उनके परिजनों पर भी कई तरह के निजी जुबानी हमले किए। कई तरह के फोटो और वीडिया

के कारण विक्रांत विधायक बने, लेकिन विक्रांत को यही महसूस हुआ कि, उन्होने जिस तरह से अपने प्रतिद्वंदी पर निजी हमले किए है उससे ही उन्हे जीत मिली है।

बस इसी वजह से विक्रांत ने अपने पिता के लोकसभा चुनावों में भी यही तरीका अपनाया और भाजपा प्रत्याशी अनीता चौहान व उनके परिवार पर निजी हमले करना शुरू नागरसिंह के खिलाफ वायरल किए। कांतिलाल भूरिया ने भी नागरसिंह चौहान के पिता पर गंभीर आरोप लगाते हुए उन्हे डाकू बताया। उन्हे जेल भेजने के किस्से भी खूब चटखारे लेकर सुनाए। विक्रांत और कांतिलाल भूरिया इन्ही निजी आरोपों के जरिए विधानसभा की तरह लोकसभा चुनावों में भी अपनी नैया पार लगाना चाहते थे। मगर विक्रांत भूरिया और उनके पिता कांतिलाल भूरिया पर शायद यह वार उलटा पड़ गया।

झाबुआ विधायक डॉ. विक्रांत भूरिया ने अपने पिता को लोकसभा चुनाव जीताने के लिए हर वह हथकंडा अपनाया जो प्रतिद्वंदी को नुकसान पहुंचा सके, लेकिन दोनों ही भूरिया पिता-पुत्र की यह कोशिशें बुरी तरह से विफल हो गई और भूरिया की हार को निजी आरोप-प्रत्यारोप नहीं रोक पाए। विक्रांत का दाव विधानसभा चुनावों की तरह उनके पिता के लोकसभा चुनावों में काम नहीं आया और लोकसभा चुनावों में दोनों पिता-पुत्र को बड़ी हार का मुंह देखना पड़ा।

अब भूरिया अपनी हार की समीक्षा करने की बात कर रहे है तो उन्हे इस बात पर भी समीक्षा करनी चाहिए कि, क्या सिर्फ चुनाव जीतने के लिए किसी पर निजी आरोप लगाना उचित है, या फिर निजी आरोप प्रत्यारोप से क्या चुनाव जीता जा सकता है? चुनाव जीतने के लिए जमीन पर उतरकर आमजन के चरण छूने पड़ते है, उनकी समस्या जानकर उसके समाधान की ओर कदम बढ़ाने पड़ते है। कार्यकर्ताओं का सम्मान करना पड़ता है, उनके साथ जमीनी स्तर पर काम करना पड़ता है। मगर कांतिलाल भूरिया एक वहम में अब तक जी रहे थे कि रतलाम-झाबुआ संसदीय सीट मानों उनकी बपौती हो और वे इस संसदीय सीट पर एक क्षत्र राज हो, लेकिन इस बार के लोकसभा चुनाव के परिणामों ने भूरिया के अंतिम चुनाव की मिट्टी पलीत कर के रख दी है। अगर अब भी सुधार नहीं होता है तो यह तय है कि, विक्रांत का आने वाला भविष्य उज्जवल तो नहीं हो सकता। अगर विक्रांत के राजनीति भविष्य को सुधारना है तो हवाबाजी बंद कर विक्रांत और कांतिलाल भूरिया दोनों को ही फिर से जमीन पर आना होगा।

अनीता ने कांतिलाल का ही जीत का रिकार्ड तोड़ा और हराया

माही की गूंज, झाबुआ।

वैसे तो चुनावों में हार और जीत होती ही रहती है। कभी कोई जीत जाता है कोई हार जाता है। मगर बिरली ही हार-जीत ऐसी होती है जो इतिहास रचती है और हमेसा याद रखी जाती है। ऐसी ही जीत और हार रतलाम-झाबुआ लोकसभा सीट पर इस बार देखने को मिली है। इस लोकसभा सीट पर हुई हार-जीत ने इतिहास रचा है तो कई रिकार्ड भी बना डाले है। यहां किसी के राजनीतिक भविष्य का अंत दिखाई दे रहा है तो किसी के राजनीतिक जीवन की उज्जवल शुरूआत नजर आती है।

Anita Nagar Singh Chouhan, BJP

Kantilal Bhuria, Congress

रतलाम-झाबुआ संसदीय सीट पर इस बार रिकार्ड की बौछार हुई है। इसमें से एक रिकार्ड यह भी है कि, अनीता नागरसिंह चौहान ने अपनी जीत का रिकार्ड बनाते हुए कांतिलाल भूरिया को अब तक के सर्वाधिक मतों से जीतने का रिकार्ड भी कांतिलाल को हराकर अपने नाम कर लिया है। इससे पहले 1999 के लोकसभा चुनावों में कांग्रेस प्रत्याशी के रूप में कांतिलाल भूरिया ने भाजपा प्रत्याशी दिलीपसिंह भूरिया को 1 लाख 49 हजार 371 मतों से हरा कर इस लोकसभा चुनावों के इतिहास में सबसे बड़ी जीत हासिल की थी। मगर अब यह रिकार्ड अनीता नागर सिंह चौहान के नाम से याद किया जाएगा, जिन्होने 2024 के इस लोकसभा चुनावों में 2 लाख 7 हजार 232 मतों से विजय हासिल की है। दिलचस्प बात यह है कि अनीता नागरसिंह चौहान ने यह रिकार्ड खुद कांतिलाल को हरा कर बनाया है। इसके अलावा अनीता ने एक किर्तिमान और रचा है। वह यह कि 2014 और 2019 की मोदी लहर के लोकसभा चुनावों में भी इस लोकसभा सीट पर भाजपा ने बड़ी जीत हासिल कर अपना कब्जा जमाया था, लेकिन इस रिकार्ड को भी अनीता चौहान ने तोड़ दिया है। 2014 व 2019 के लोकसभा चुनावों में मोदी लहर थी, बावजूद इसके 2014 में भाजपा 1 लाख 8 हजार 452 मतों से जीती थी। वहीं 2019 की अगर बात करें तो यहां से भाजपा ने 90 हजार 636 मतों से जीत दर्ज की थी। इन सारे रिकार्डों को ध्वस्त करते हुए अनीता नागरसिंह चौहान ने 2024 के लोकसभा चुनावों में 2 लाख 7 हजार 232 मतों से रिकार्ड जीत हासिल कर भाजपा के ही पूराने सारे जीत के रिकार्ड ध्वस्त कर दिए।

इस बार के लोकसभा चुनावों में कांग्रेस के कांतिलाल भूरिया ने सहानुभूति कार्ड खेलते हुए मंच से यह घोषणा की थी कि, यह मेरा आखिरी चुनाव है, मुझे वोट देकर आखिरी बार दिल्ली भेजें। मगर कांतिलाल का यह सहानुभूति कार्ड उनके किसी काम नहीं आया। अब सवाल यह है कि, क्या कांतिलाल भूरिया अब आगे चुनाव नहीं लड़ेंगे? क्योंकि यह कोई पहला मौका नहीं है जब कांतिलाल ने अपने चुनाव को आखिरी चुनाव बताया हो। इससे पहले भी वे पिछले चुनावों में इस तरह का बयान दे चुके है। अगर वाकई यह कांतिलाल भूरिया का आखिरी चुनाव था तो फिर यह एक बड़ी ही दुर्गति वाली राजनीतिक विदाई मानी जाएगी। क्योंकि अगर कांतिलाल भूरिया का यह अंतिम चुनाव था तो यह रिकार्ड में हमेशा रहेगा कि, जनता ने कांतिलाल को चुनावों से अंतिम विदाई रिकार्ड मतों से हरा कर दी है। 2014 के लोकसभा चुनावों में रतलाम-झाबुआ संसदीय सीट पर कांग्रेस की हार का यह नया रिकार्ड है। जिसमें कांतिलाल भूरिया 2 लाख 7 हजार 232 मतों से हारे है। इसी के साथ कांतिलाल भूरिया ने चुनावी मैदान से सन्यास लेते हुए इस संसदीय सीट पर सबसे बड़ी हार का रिकार्ड भी अपने नाम कर लिया है।

40-45 साल जिस व्यक्ति ने सिर्फ राजनीति की हो और येन-केन प्रकारेरण अपनी कुर्सी पर बना रहा हो वह एक दम से यह कह दे कि अब मैं चुनाव नहीं लड़ूंगा या यह मेरा अंतिम चुनाव है, तो बात थोड़ी हजम नहीं होती दिखाई देती है। एक बहुत ही पुरानी कहावत है कि बंदर कितना ही बूढ़ा हो जाए वह गुलाट मारना नहीं छोड़ता। इसलिए यह कह पाना मुष्किल हो रहा है कि कांतिलाल भूरिया अब चुनाव नही लड़ेंगे।

सारंगी क्षेत्र में कांग्रेस का सुफड़ा साफ

माही की गूंज, सारंगी। संजय उपाध्याय

मध्यप्रदेश की रतलाम लोकसभा सीट के परिणाम आ गए हैं। भाजपा प्रत्याशी अनीता नागर सिंह चौहान ने बड़ी जीत दर्ज की है। यहां अनीता चौहान ने कांग्रेस उम्मीदवार कांतिलाल भूरिया को 2 लाख 7 हजार 232 वोट से चुनाव हरा दिया है। बात करे पेटलावद विधानसभा के सारंगी मंडल की तो यहां भी भाजपा के कार्यकर्ताओं ने मेहनत कर इतिहास रच दिया। सारंगी मे तीनो बूथ पर विजय हासिल की एवं आस पास इलाके से कांग्रेस का सुफड़ा साफ कर दिया। बता दे कि, कुछ दिन पूर्व मे यहां पर कई कांग्रेसी युवाओं ने केबिनेट मंत्री निर्मला भूरिया के नेतृत्व मे भाजपा का दामन थामा था।

मंडल अध्यक्ष सुखराम मोरी ने कहा कि, हम सभी कार्यकर्ताओं के लिए यह गौरव की बात है कि भाजपा ने प्रदेश की सभी 29 सीटें जीतकर इतिहास रच दिया है। मोदी का तीसरी बार लगातार प्रधानमंत्री चुना जाना एक अहम क्षण है। युवा मोर्चा

के जिला उपाध्यक्ष जीतेन्द्र गेहलोत ने कहा कि, हम केबिनेट मंत्री निर्मला भूरिया के मार्गदर्शन से हमने पूरी पेटलावद विधानसभा मे ऐतिहासिक विजय हासिल की और आगे भी हम सब मिल कर सारंगी मंडल मे भाजपा का परचम लहराएंगे। युवा नेता जयराज भट्ट ने वरिष्ठ नेताओं एवं मंडल अध्यक्ष सुखराम मोरी की सक्रियता की सहारना की और कहा कि, ये जीत सारंगी मंडल संघर्षसील कार्यकर्ताओं की जीत के जिन्होने दिन रात एक करके भाजपा को विजय श्री दिलवाई।

भाजपा कार्यकर्ताओं ने मनाया जश्न

भाजपा उम्मीदवार श्रीमती अनिता चौहान के विजय होने पर नगर में भाजपा कार्यकर्ताओं ने भाजपा कार्यालय पर आतिशबाजी कर नारे लगाकर खुशी जाहिर की। डीजे के साथ पूरे नगर में आतिशबाजी कर जुलूस निकाला। इस ऐतिहासिक जीत पर भाजपा कार्यकर्ताओ ने मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव और देश के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का आभार माना।

पॉलिटिकल प्रेशर को लेकर सीजेआई का बड़ा बयान

नई दिल्ली, एजेंसी।

भारत के प्रधान न्यायाधीश (सीजेआई) ने डीवाई चंद्रचूड़ ने कहा कि, चुनाव भारत के संवैधानिक लोकतंत्र का मूल आधार है, वहीं न्यायाधीश व्यवस्था की रक्षा करने वाले संवैधानिक मूल्यों को सतत बनाए रखने की भावना को प्रदर्शित करते हैं। सीजेआई चंद्रचूड़ प्रतिष्ठित ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में, समाज में निर्णायकों की मानवीय भूमिका के विषय पर अपनी बात रख रहे थे। उन्होंने इस दौरान न्यायिक प्रणाली में अधिक पारदर्शिता लाने में प्रौद्योगिकी की भूमिका पर प्रकाश डाला। सोशल मीडिया पर न्यायाधीशों के खिलाफ की जाने वाली कुछ अनुचित आलोचनाओं को रेखांकित करते हुए भारत के प्रधान न्यायाधीश ने इस बात पर बल दिया कि प्रौद्योगिकी का समग्र प्रभाव न्यायपालिका को समाज के व्यापक वर्ग तक पहुंचने में मदद करना है। सीजेआई चंद्रचूड़ ने साफ किया है कि उन्हें कभी भी पॉलिटिकल प्रेशर का सामना नहीं करना पड़ा है।

कभी नहीं करना पड़ा राजनीतिक दबाव का सामना

उन्होंने भारत के आम चुनावों को लेकर पूछे गए एक सवाल के जवाब में कहा, चुनाव संवैधानिक लोकतंत्र का मूल आधार है... भारत में न्यायाधीश निर्वाचित नहीं होते और इसका एक कारण यह भी है कि न्यायाधीश हालातों और संवैधानिक मूल्यों को सतत बनाए रखने की भावना को प्रदर्शित करते हैं। सीजेआई चंद्रचूड़ ने कहा, लोकतंत्र में न्यायपालिका की महत्वपूर्ण भूमिका है, जिसमें हम परंपरा की भावना को प्रदर्शित करते हैं और साथ ही इस भावना को भी प्रदर्शित करते हैं कि एक अच्छे समाज का भविष्य कैसा होना चाहिए। निर्णय सुनाते समय उन्हें जिन राजनीतिक और सामाजिक दबाव का सामना करना पड़ा, उसके बारे में पूछे जाने पर उन्होंने कहा, न्यायाधीश के रूप में मेरे 24 वर्षों के कार्यकाल में मुझे कभी भी राजनीतिक दबाव का सामना नहीं करना पड़ा।

फैसले का नहीं करूंगा बचाव, क्योंकि...

सीजेआई ने कहा, हमारा जीवन सरकार की राजनीतिक शाखा से बिल्कुल अलग है... लेकिन स्पष्ट रूप से न्यायाधीशों को अपने निर्णयों के व्यापक राजनीति पर पड़ने वाले प्रभाव से परिचित होना चाहिए। यह राजनीतिक दबाव नहीं है, बल्कि न्यायालय द्वारा किसी निर्णय के संभावित प्रभाव की समझ है। वहां मौजूद विद्यार्थियों ने सीजेआई चंद्रचूड़ से पिछले वर्ष उच्चतम न्यायालय की ओर से विशेष विवाह अधिनियम पर सुनाए गए फैसले के बारे में सवाल पूछा जिसमें भारत में समलैंगिक विवाह को वैध बनाने के खिलाफ फैसला सुनाया गया था। उन्होंने कहा, मैं यहां फैसले का बचाव नहीं करूंगा, क्योंकि एक न्यायाधीश के तौर पर मेरा मानना ??है कि एक बार फैसला सुनाए जाने के बाद यह न केवल राष्ट्र की बल्कि वैश्विक मानवता की पूंजी बन जाता है।

प्राकृतिक पूंजी की लूट से उपजा सभ्यता का संकट

अप्रैल के आखिरी सप्ताह में देहरादून में भारतीय वन सेवा (आईएफएस) अधिकारी प्रशिक्षुओं के 2022 बैच के दीक्षांत समारोह में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू के भाषण के संपादित अंश पढ़े, तो मुझे आलोक शुक्ला की याद आ गई। जो एक अथक योद्धा और छत्तीसगढ़ बचाओ आंदोलन के संयोजक थे। आलोक शुक्ला ने एक सफल सामुदायिक अभियान का नेतृत्व किया था, जिसके तहत हसदेव अरण्य के प्राचीन जंगलों में 445,000 एकड़ जैव विविधता से समृद्ध जंगलों को बचाया।

दीक्षांत समारोह में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने कहा था, 'जब जंगलों की अहमियत समझने की बात आती है तो मनुष्य जानबूझकर खुद को भूलने के रोगियों में शामिल कर लेता है- यह जंगल की आत्मा है जो पृथ्वी को चलाती है।'और उसी भावना से जिस भाव से उन्होंने उस दिन उत्तीर्ण होने वाले सभी अधिकारियों को बधाई दी, मुझे लगता है कि यह स्वीकार करना उचित होगा कि आलोक शुक्ला भी'समाज में प्रगति के प्रतीक हैं।'

अब इससे पहले कि आप मुझसे पूछें कि आलोक शुक्ला कौन हैं और उन्होंने जंगलों को बचाने के लिए क्या अभूतपूर्व योगदान दिया है, और वह भी ऐसे समय में जब उच्च आर्थिक विकास हासिल करने के लिए जंगलों की लूट को पूर्व-अपेक्षित क्षति माना जाता है, उन्हें 2024 के गोल्डमैन पर्यावरण पुरस्कार से नवाजा गया है, जिसे 'ग्रीन नोबेल' भी कहा जाता है। वह इस वर्ष सम्मान पाने वाले छह महाद्वीपों के सात बहादुरों में से एक हैं। निडर और साहसी, सबसे शक्तिशाली आर्थिक ताकतों से लोहा लेने की उनकी अदम्य भावना ने छत्तीसगढ़ के आदिवासी क्षेत्र में लगभग 4.5 लाख एकड़ के अमूल्य आदिम जंगलों में लाखों पेड़ों को बचाया है। हसदेव समुदाय ने न केवल उस विशाल जैविक संपदा की रक्षा के लिए सभी बाधाओं के खिलाफ संघर्ष किया है, बल्कि यह सामुदायिक प्रयास मानवता के हित में प्राकृतिक संसाधनों से जुड़े पारंपरिक ज्ञान के संरक्षण में भी मदद करेगा।

यदि मैं पारिस्थितिकी तंत्र और जैव विविधता के अर्थशास्त्र (टीईईबी) दृष्टिकोण को लागू करने वाले वास्तविक लेखांकन मानदंडों का उपयोग करके आर्थिक मूल्य का पता लगाने का प्रयास करूं, तो इसकी कीमत कई ट्रिलियन भारतीय रुपये होगी।

जब मैंने इससे पहले कहा कि आलोक शुक्ला बेहद शक्तिशाली आर्थिक ताकतों के विरुद्ध सक्रिय रहे (और अभी भी हैं) तो यह संदर्भ हसदेव अरण्य के जंगलों में अलॉट की गयी 21 नियोजित कोयला खदानों के संबंध में था। आदिवासी समुदायों की ओर से एक लंबी और सतत मुहिम के बाद, उन्होंने साल 2012 में जो हसदेव अरण्य बचाओ संघर्ष समिति गठित की, उसने प्रतिरोध को इस तरह से संगठित किया कि वह प्रभावी बन गयी, और आखिरकार सर्वाधिक शक्तिशाली कॉर्पोरेशन में से कुछ को मिले 21 नियोजित कोयला खानों के परमिट रद्द करने के लिए सरकार को मजबूर करने में सफल रही। इस प्रक्रिया में, स्थानीय समुदायों द्वारा सतत संघर्ष, जिसमें अनगिनत धरने, गढ़वाल के पहाड़ों में विख्यात चिपको आंदोलन की तरह पेड़ों को लिपटना और राज्य की राजधानी रायपुर की ओर 166 किलोमीटर कूच, शामिल है। यदि किसी को इस संघर्ष, जारी रहे आंदोलनों और समुदायों के उत्पीड़न की कार्रवाई का एक दस्तावेज तैयार करना हो तो यह नेटफ्लिक्स, प्राइम और अन्य ओटीटी प्लेटफार्मों के लिए एक आकर्षक डॉक्युमेंटरी सीरीज होगी। यह निश्चित तौर पर हाथी की फुसफुसाहट नहीं थी बल्कि ये अति आधुनिक आरा मशीनें थी जिनका आदिवासियों को सामना करना था।

गोल्डमैन पर्यावरणीय पुरस्कार भी ऐसे समय पर आया है जब चिपको आंदोलन अपनी 50वीं वर्षगांठ बना रहा है। डाउन टू अर्थ पत्रिका के 16-30 अप्रैल, 2024 अंक में वर्णित है कि चिपको आंदोलन ने देशव्यापी पर्यावरण चिंताओं को प्रेरित किया था और नीति निर्माण पर प्रभाव डाला था। उस परिवर्तन का नेतृत्व करने वाले चंडी प्रसाद भट्ट याद करते हैं, 'जब ठेकेदार और मजदूर साल 1973 में मार्च माह की एक सुबह रैणी गांव के जंगल को काटने के लिए पहुंचे, तो गांव में कोई आदमी नहीं था। चंडी प्रसाद आगे बताते हैं कि 'गौरा देवी, जो उस समय महिला मंडल की मुखिया थीं, अन्य महिलाओं को जंगलों में ले गयी और पेड़ों से लिपट गयी।' बाकी आगे सब इतिहास है।

चिपको आंदोलन को याद करना इसलिए महत्वपूर्ण है कि हसदेव के जंगलों में भी महिलाओं को पेड़ों से लिपटना पड़ा था। लेकिन गढ़वाल क्षेत्र में लकड़ी काटने आने वाले लकड़ी व्यवसायियों के उलट यहां छत्तीसगढ़ में राज्य सरकार से मदद और शह प्राप्त शक्तिशाली कंपनियां थीं। इसलिए शायद छत्तीसगढ़ को पेड़ों को बचाने के लिए कुछ ज्यादा करने की जरूरत थी, और यही बात थी कि वहां सामुदायिक प्रतिरोध जरूरी हो गया था।

देविंदर शर्मा

पर्यावरणीय संरक्षण के साथ आर्थिक विकास का संतुलन बनाने की बात अकसर की जाती है लेकिन जब मानवता के लिए जंगलों को बचाने का मामला होता है, खासकर मौसम में उबाल के वक्त, हमेशा अर्थशास्त्र को ही प्राथमिकता दी जाती है। जबकि यह ज्ञात है कि दुनिया के कुछ सबसे बड़े उद्योग हर साल अनुमानित 7.3 ट्रिलियन डॉलर मूल्य की प्राकृतिक पूंजी को निगल जाते हैं जो स्पष्ट रूप से पृथ्वी ग्रह को सभ्यता के संकट की ओर ले जा रहा है। यह भी कि जिस तरह से प्राकृतिक संसाधनों की लूट की इजाजत दी जा रही है, उसमें कहीं जरा भी पछतावा नजर नहीं आता। जंगलों के कटान की वजह से वातावरण में वैश्विक जलीय चक्र सूख रहे हैं। जैसे कि येल विश्वविद्यालय की स्टडी बताती है, जंगल स्थानीय वातावरण को ठंडा करके स्थानीय जलवायु को नियंत्रण में रखते हैं।

यहीं आलोक शुक्ला ने देश को औपनिवेशिक दृष्टिकोण से आगे की बात सोचने की राह दिखाई है। हमें अपने ग्रह को विनाश से बचाने के लिए अलग प्रकार के आर्थिक सिद्धांतों की जरूरत है। हम पुराने पड़ चुके ग्रोथ मॉडल के साथ और ज्यादा आगे नहीं बढ़ सकते हैं।

सरपंच-सचिव की जोड़ी तू डाल-डाल तो मैं पात-पात

माही की गूंज, पारा।
गजेंद्र चौहान

जिले में ग्राम पंचायत कहीं की भी हो सरपंच व सचिव प्रशासन व आम लोगों को गांधी छाप चूना लगाने में कोई कसर नहीं छोड़ते। सरकार पंचायत में कई योजनाएं लागू करती है मगर न तो आम लोगों को इसकी जानकारी होती है और न ही मजदूरों को और न ही पंचायत कभी प्रेस नोट जारी करती है। पंचायत के काम मन माफिक तरीके से चलाए जाते हैं। जो भी निर्माण कार्य गांव की पंचायत करवाती है इसकी जानकारी पंचायत के सचिव को भी नहीं होती, ऐसा हो सकता है क्या...? या तो पंचायतकर्मी झूठ बोलते हैं या फिर तू डाल-डाल तो मैं पात-पात उड़ने का काम करते हैं।

नाला चौड़ा कर कच्ची पाल बांधी गई।

खोदी गई मिट्टी दूसरों के खेतों में डाली गई।

तालाब के समीप अतिक्रमण कर बनाया मकान

ग्राम गुलाबपुरा में तालाब से करीब 15 से 20 फीट की दूरी पर अतिक्रमण कर मकान बना दिया गया। अगर जरूरत से ज्यादा बारिश होती है तो मकान डूब में आ सकता है इसका जिम्मेदार कौन होगा। क्या स्थानीय ग्राम पंचायत और सरकार को किसी बड़ी घटना का इंतजार है...? इसकी पूरी खबर हम आपको अगले अंक में बताएंगे।

ये है मामला...

झाबुआ जिले के ग्राम गुलाबपुरा में पंचायत द्वारा तीन स्थानों पर स्टाफ डेम का नया निर्माण करवाया गया।

उक्त निर्माण कार्य घटिया स्तर का है यह निर्माण स्थल पर देखते हुए ही पता चलता है कि किस प्रकार चौड़े नालों के अंदर जेसीबी से खोदकर मिट्टी की पाल बना दी गई। ऐसे में अगर तेज बारिश होती है तो गड्ढा भर जाने पर मिट्टी की पाल कभी भी टूट सकती है। पहला कच्चा डेम सेमली नाका के पास, दूसरा कच्चा डेम टीहीया नाका के पास व तीसरा डेम करू भलू व जोगा भुआन दोनों के खेतों के समीप खुदाई की गई। वही बड़ी बात यह भी है कि, खुदाई की गई मिट्टी को दूसरों के खेत में डाला जा रहा है।

एक ही दिन में बना दिए तीन डेम

ग्राम पंचायत गुलाबपुरा में एक ओर जादुई मंजर देखने को मिला। सूत्र बताते है कि, ग्राम पंचायत ने एक ही दिन में शासकीय गाइडलाइन को ताक में रखकर बिना मजदूरों के एक ही दिन में जेसीबी व 5 ट्रैक्टरों द्वारा तीन डेम का निर्माण कार्य कर दिया गया। जबकि निर्माण कार्य मजदूरों द्वारा करवाना था।

यहां झूठ बोल गया सचिव

माही की गूंज प्रतिनिधि ने जब इस मामले की जानकारी पंचायत सचिव प्रकाश बामनिया से मांगी तो सचिव झूठ पर झूठ बोलता रहा। सचिव से एक बार नहीं कई बार पूछा गया कि, आपकी ग्राम पंचायत जो निर्माण कार्य करवा रही है उसमे तालाब बना रहे हो या स्टाफ डेम...? सचिव ने जवाब में कहा, मुझे इसकी जानकारी नहीं है। आप सरपंच साहब से पूछो।

वहीं गूंज सूत्रों का यह भी कहना है कि, जब निर्माण कार्य चल रहा था उस दिन सरपंच व सचिव ने खड़े रहकर पूरा काम करवाया था, सचिव झूठ बोल रहा है।

आपको किसने शिकायत की

वहीं जब इस मामले में गुलाबपुरा सरपंच राकेश डामोर से फोन पर पूछताछ की गई तो सरपंच भी हड़बड़ाता हुआ दिखाई दिया। कुछ देर तक तो यह भी नहीं बता सका की डेम बन रहा है या तालाब। सरपंच ने गूंज प्रतिनिधि से कहा, आप कहां हो...? गूंज प्रतिनिधि ने कहा, मैं पारा में हूं। सरपंच ने कहा, मैं मिलने आ रहा हूं।

जिसके बाद पारा आने के बाद सरपंच ने गूंज प्रतिनिधि से एक ही बात कही कि, आपको किसने शिकायत की है। समाचार मत लगाना कहकर गूंज प्रतिनिधि को खरीदने की कोशिश की गई, जिस पर गूंज प्रतिनिधि ने बिकने से साफ इनकार कर दिया।

यह कोई छोटी-मोटी बात नहीं है कि, किस प्रकार एक पत्रकार को भ्रष्टाचार का मामला दबाने के लिए तथा उसे खबर पर रिपोर्टिंग न करने के लिए गांधी छाप दिखाकर लालच दिया गया। जो की एक निंदनीय कृत्य होकर अपराध की श्रेणी में आता है। ऐसे जनप्रतिनिधि पर कड़ी कार्रवाई करके खड़ा एक्शन लिया जाना चाहिए ताकि आने वाले समय में कोई भी इस प्रकार का कदम न उठाएं।

हज़रत ओढ़ी वाले बाबा के सालाना उर्स हुआ आगाज

माही की गूंज, पेटलावद।

आज गुरुवार 6 जून से सर्वधर्म, अमन-चैन और कोमी एकता के प्रतीक शहंशाहे पेटलावद हजरत ओढ़ी वाले दाता रे.अ. (दादाजी) के सालाना उर्स की शुरुआत होगी। इस दौरान हजरत के आस्ताने पर जायरिन अपनी मन्नतो को पूरा करने के लिए बड़ी संख्या में इकठ्ठे होंगे। तड़के सुबह बाबा का गुस्ल किया जाएगा। इसके बाद सुबह फजर की नमाज 5 बजे बाद संदल पेश किया जाएगा। उर्स के एक दिन पहले से सूफी-संत फकीरों का आगमन शुरू हो गया।

गौरतलब है कि, पंपावती नदी के पावन तट के किनारे स्थित दातार की दरगाह न केवल मुस्लिम समुदाय बल्कि अन्य धर्म के लोगो के लिए भी आस्था का केंद्र है। यहां होने वाले उर्स में सीमावर्ती गुजरात व राजस्थान राज्य से भी जायरीन आते है।

उर्स की तैयारियां पूर्ण

उर्स कमेटी के सदर अमजद लाला और शाकिर शेख ने संयुक्त रूप से बताया बाबा के 21वें उर्स की तैयारियां लगभग पूरी हो चुकी है। बाबा के दरबार में सेमरोड़ के संतोष भाई द्वारा आकर्षक रोशनी की गई है जो काफी आकर्षण का केंद्र बनी हुई है। इसके साथ ही पास दरगाह के पास स्थित श्री खेड़ापति हनुमान मंदिर और श्री भैरवनाथ मंदिर को भी सजाया गया है। कमेटी की यह पहल कोमी एकता और सांप्रदायिक सोहार्द की मिसाल पेश कर रही है। आस्ताने पर आने वाले जायरिनों के लिए सम्पूर्ण व्यवस्था की गई है। उर्स में साउंड श्री राम डीजे पेटलावद के कलाकारो द्वारा लगाया जाएगा। वहीं टेंट व्यवस्था इंडिया टेंट हाउस और वीडियोग्राफी झलक फोटो स्टूडियो की ओर से की जा रही है। सर्व समाज उर्स कमेटी ने उर्स में अधिक से अधिक संख्या में सहभागिता करने का आह्वान किया है। उर्स 8 जून तक चलेगा। तीन दिनों तक विभिन्न धार्मिक कार्यक्रम का आयोजन होगा। रात में कव्वाली की महफिल सजेगी। इसमें उत्तरप्रदेश और मध्यप्रदेश की कव्वाल पार्टियां हजरत की शान में कलाम पेश करेंगी।

पूरी होती हैं जायज तमन्ना

गोरतलब है कि हजरत ओढ़ी वाले दाता की दरगाह करीब 351 साल पुरानी प्राचीन बताई गई है। उनका मजार कदीमी होकर हर जाति व धर्म को मानने वाले यहां अपनी जायज तमन्नाओं को लेकर आते है और मुराद पूरी होने पर अकीदत के फूल चढ़ाते हैं। हजरत के उर्स की महफिल की रौनक बढ़ाने के लिए कई बुजुर्ग और सूफी-संत यहां तशरीफ ला रहे हैं। दरगाह का नूरानी और चिश्ती स्वरूप हर किसी का भी ध्यान अपनी ओर खींच लेता है। हजरत दातार के मजार पर विगत 20 वर्षों से उर्स का प्रोग्राम किया जा रहा हैं।

किस दिन क्या होगा

6 जूनः सुबह 8 बजे आस्ताने औलिया पर कुरआन ख्वानी होगी। शाम को असर की नमाज के बाद पुलिस वाले बाबा के आस्ताने से चादर शरीफ का जुलूस निकलेगा। जुलूस हुसैनी चोक से शुरू होकर सीधे पंपावती नदी किनारे आस्ताने औलिया पर पहुंचेगा। जहां चादर पेश की जाएगी। रात 8 बजे बाद दरगाह में तकरीर का आयोजन होगा। जिसमें सैय्यद अजहर अली बापू साहब तकरीर करेंगे।

7 जूनः रात 8 बजे बाद शुरू होने वाले महफिले सिमां कार्यक्रम में देश के प्रसिद्ध कव्वाल जावेद हुसैन खान (रामपुर, यूपी) आयेंगे।

8 जूनः सुबह 9 बजे महफिले रंग का आयोजन होगा। जिसमें जावरा के मशहूर कव्वाल यूसुफ फारुख दाता की शान में कलाम पेश करेंगे। इसके बाद कुल की फातेहा होगी। दोपहर में लंगर (विशाल शुद्ध शाकाहारी भंडारे) का आयोजन किया जाएगा।

अणु संस्कार पाठशाला के बच्चों ने की गौ सेवा

माही की गूंज, पेटलावद।

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ पेटलावद में संचालित अणु संस्कार पाठशाला के बच्चों को जीव दया का पाठ पढ़ाने के उद्देश्य से स्थानीय गौशाला मे सेवा हेतु ले जाया गया। बच्चों ने पाठशाला में मिलने वाली अणु डॉलर के पैसों से चारा खरीद कर 178 गौ माता व उनके वंशजों की बड़े उत्साह से सेवा की। सर्वप्रथम गौ माता को नवकार मंत्र का सामूहिक पाठ सुनाया भगवान महावीर स्वामी व गुरुदेव उमेश मुनि जी महाराज साहब के जय घोष के नारे भी लगाए। फिर बच्चों ने अपने हाथों से गौ माता को हरा चारा परोसा। पार्षद संजय चाणोदीया व गांव की बेटियों ने नाम को गुप्त रखते हुए 45 से अधिक बच्चों व नवयुग मंडल के सदस्यों व सेवा देने वाले अन्य सभी उपस्थित लोगों को जलपान कराया। आसाराम बापू आश्रम के प्रबंधक जीतू ने सभी बच्चों को प्रभावना दी। गेम खेलने हेतु परिसर भी उपलब्ध करवाया व ठंडे पानी की व्यवस्था भी की। सेवा देने के लिये संचालीका श्रीमती मधु मेहता कुमारी दीपांशी भंडारी महिला मंडल अध्यक्ष श्रीमती आजाद भंडारी विशेष रूप से उपस्थित रहे। बच्चों का यह सेवा कार्य श्री संघ व गांव में प्रशंसा हुआ चर्चा का विषय बना हुआ है।

पर्यावरण दिवसः पेड़-पौधो की बच्चो की तरह देखभाल करते है 83 वर्षीय बद्रीलाल

माही की गूंज, बरवेट।
जगदीश प्रजापति

विकास की अंधी दौड़ में हम जाने अनजाने में अपने परिवेश को काफी नुकसान पहुंचा रहा है। पर देश में कई ऐसे लोग भी हैं जो अपने प्रयासों से इस वसुंधरा को हरा-भरा बनाए रखने की कोशिश में जुटे हैं। आइए रूबरू होते हैं कुछ ऐसे लोगों से जो पर्यावरण बचाने का प्रयास, कोरोना काल मे आक्सीजन ओर भीषण गर्मी में छाव देने के लिए पेड़ लगा कर मिसाल कायम कर रहे हैं। जो पिछले छह दशक से पर्यावरण को सजोने का प्रयास कर रहे है।

जिले के बरवेट ग्राम में एक पर्यावरण प्रेमी ऐसा भी जो समय से रोज पोधो को पानी पिलाता है। जी हां हम बात कर रहे है 83 वर्षीय बद्रीलाल पाटीदार (बदरुबा) की। जूस प्रकार से कोई व्यक्ति अपने ऑफिस टाइम का ध्यान रखता है वैसे ही बद्रीलाल भी पोधों को पानी पिलाना नहीं भूलते। 83 वर्षीय बद्रीलाल स्वयं के द्वारा जो पोधे लगाए गए है ओर वो पौधे आज विशालकाय वृक्ष का रूप ले चुके है। उनको भी पानी पिलाना नहीं भूलते। इनके पर्यावरण प्रेम को देखकर गाव का हर व्यक्ति अपने आप को गोरवित महसूस कर रहा है। वर्तमान में इस भीषण गर्मी के नीचे बैठकर लोग यही कहते है कि इन विशालकाय छायादार पौधों को बदरुबा ने बड़ा किया है। ओर स्वयं कि पहचान वृक्ष प्रेमी के नाम से बना ली है। यह अपने आप में बहुत बड़ी बात है। विरले लोग ही वृक्ष प्रेमी के नाम से जाने जाते है। क्षेत्र का हर व्यक्ति बदरुबा का पर्याय वृक्ष प्रेमी के नाम से जानने लगे है। जिन्होने सेकड़ो पौधे लगाए है उनको टाइम अनुसार यह पोधों कि सेवा करते हुए दिखते है। आज भी 83 वर्ष की उम्र में भी वही जज्बा लिए है। कितनी भी गर्मी हो वे किसी भी तरह पेड़ की सेवा करते रहते है। बरवेट में लगे कई वृक्ष बद्दरूबा के नाम से जाने लगे है। अपने जीवन के 60 बसंत पर्यावरण के सहेजने में दे दिए है। इस व्यक्तित्व ने वृक्ष के लिए अपना जीवन खपाया जो आदर्श उदाहरण है। सूर्योदय से दिनचर्या कि शुरुवात करने वाले वृक्ष को पानी पिलाना शुरू करते है जो सूर्यास्त तक यह क्रम चलता रहता है।

इसे कहते है पर्यावरण प्रेमी

पीपल, बड़ ओर निम के पेड की छाया देखकर बद्रीलाल पाटीदार का मन विचलित हो उठा। उन्होंने जीवन में पेड़ बचाने और लगाने की ठान ली। उनके इसी कार्य ने उनको पर्यावरण प्रेमी बना दिया। पर्यावरण प्रेमी की उपाधि उन्हें ग्रामीणों ने दी। उन्होंने बताया कि अब तक लगभग 500 पेड़ लगवा चुके हैं। आज से लगभग 60 साल पहले से बद्रीलाल अपने गांव बरवेट में कई देव स्थान पर पेड़ पौधे लगा चुके है।

जब पर्यावरण संरक्षण की बात आती है तो सबसे पहले बरवेट के बद्रीलाल का नाम लिया जाता है। जो गांव की शुद्ध आबोहवा को सार्वजनिक स्तर पर काम कर रहे हैं। आज से नहीं 60 सालों सालों से गांव में पर्यावरण को संरक्षण दे रहे हैं।

83 की उम्र के पर्यावरणप्रेमी

बरवेट के नागरिक अश्विन पाटीदार ने बताया कि, 83 वर्षीय बदरुबा एक ऐसे शख्स है जो पर्यावरण को बचाने के लिए मिसाल बन गए है। कई ग्रामो में छोटेछोटे अभियान और कुछ बदलाव कर पर्यावरण को बचाने की पहल काफी समय से कर रहे हैं। ऐसे ही एक 83 वर्षीय बुजुर्ग पर्यावरण को बचाने के लिए पिछले कई सालों से काम कर रहे हैं। ऐसे में लोगों को पर्यावरण बचाने के लिए आज के युवा को आगे आना चाहिए।

सार्वजनिक स्थान पर लगाए है पौधे

ग्राम बरवेट के रतनलाल पाटीदार ने बताया कि गाव के बुजुर्ग बदरुबा को पर्यावरण से इतना लगाव है कि वे पिछले 60 वर्षों से पौधे लगाने और उनको पानी पिलाने का कार्य कर रहे है। शायद ऐसा करने से उनको सुकून महसूस होता हो। जानकारी के अनुसार गांव में स्थित शंकर मंदिर, हनुमान मंदिर, तेजाजी मंदिर, स्कूल, रामदेवजी मंदिर, लालबाई माताजी मंदिर, यहां तक कि मुक्तिधाम के पास पड़ी खाली जगह में पेड-पौधें लगाकर प्रतिदिन उनको पानी पिलाने का कार्य करते है।

जब पेड़ कटते देखते है तो रो पड़ते है

एक ऐसा हौसला है झाबुआ जिले के बरवेट के बुजुर्ग बदरुबा पाटीदार का। जिन्होंने पिछले 60 वर्षों से पेड़-पौधों को लगाने व उनकी देखभाल करने का कार्य कर रहे है। वही उन्होंने कोरोनाकाल में भी सेकड़ो पौधे लगाए और लगातार उनकी देखरेख की है और आज भी कर रहे हैं। पर्यावरण प्रेम के चलते बदरुबा ने बताया कि जब हरा पेड़ कटता देखता हूं तो दिल रो पड़ता है।

ऐसा है बदरुबा का पर्यावरण प्रेम

बरवेट के व्यापारी विपुल लोढा बताया कि, बदरुबा प्रतिदिन इनके संरक्षण व पानी देने का कार्य करते है। हमने देखा है कि वे गर्मी के दिनों में प्रतिदिन सुबह 5 बजे व सर्दी में सुबह 6 बजे बाल्टी लेकर घर से निकलते हैं और उनके द्वारा लगाये गये पौधों को पानी देने का कार्य करते है। साथ ही महीने में कई बार विभिन्न जगहों पर नये पौधे लगाने का कार्य भी करते है। बताया जाता है कि इस कार्य को पिछले 60 वर्षों से कर रहे हैं। उनको पर्यवरण के प्रति प्रेम और पौधरोपण व पौधों को पानी पिलाने में सुकून मिलता है।

इस प्रकार से की शुरुआत

पर्यावरण प्रेमी बदरुबा ने बताया कि, करीब 60वर्षों पूर्व उन्होंने इस पर्यावरण संरक्षण व वृक्षारोपण कार्य की शुरुआत की। उन्होंने सबसे पहले अपने घर से शुरुआत करते हुए आसपास की जगहों पर भी पौधे लगाने का कार्य किया। इसके बाद महादेव मंदिर परिसर, हनुमान मंदिर, रामदेवजी मंदिर लालबाई फूलबाई माताजी मंदिर, मुक्तिधाम, भेरूजी बावड़ी, तेजाजी मंदिर, बस स्टैंड, स्कूल आदि स्थानों पर सेकड़ो पौधे लगाए है। जो कि आज विशालकाय रूप ले चुके है। बुजुर्ग बदरुबा ने बताया कि अब तो मुझे लोग पौधा लाकर भी देते है, तो मैं उसको पानी पिलाकर देखरेख करने का कार्य करता हूं।

आज याद आ रहे विशालकाय वृक्ष

बरवेट के अशोक त्रिवेदी ने बताया कि, वर्तमान में प्रकृति त्रासदी दे रही है, चाहे वह कोरोना काल के रूप में या ठंड, जल प्रलय या भीषण गर्मी जिससे बचने के लिए कोई विकल्प नही है। ऐसे में भीषण गर्मी में छाव व कोरोना काल मे कोरोना आक्सीजन इन वृक्षो से ही मिला है। कोरोना काल मे कई कोरोना पॉजिटिव इन वृक्षो के नीचे माहिनो गुजारकर ठीक हुए है। वही हम लोग भी दिन भर इस गर्मी बचने के लिए छायादार वृक्ष की शरण लेते है।

संपादकीय

जीवनदायिनी जलधारा को सहेजने की जरूरत...

भले ही विज्ञान और इंजीनियरिंग की तरक्की से देश-दुनिया ने सिंचाई के तमाम संसाधन जुटा लिए हों, मगर मानसून का इंतजार किसान ही नहीं, हर भारतीय को बेसब्री से रहता है। कृषक के लिए मानसून जहां धान व अन्य फसलों के लिए प्राणधारा का काम करता है, वहीं आम आदमी को गर्मी की तपिश से मुक्त करता है। इस बार जैसे-जैसे पारा आसमान की तरफ चढ़ता रहा, लोगों को मानसून का इंतजार तीव्र होता गया। अब जबकि मानसून ने केरल व पूर्वोत्तर के कुछ राज्यों को भिगो दिया है तो शेष देश भी उत्साहित है कि देर-सवेर मानसून उनके दरवाजे तक भी दस्तक दे जाएगा। वैसे हाल में आए चक्रवाती तूफान की वजह से भी कुछ पश्चिम बंगाल व पूर्वोत्तर के राज्यों में बारिश हुई है और बाढ़ जैसा मंजर भी पैदा हुआ। बहरहाल तपते उत्तर भारत को तो अब मानसूनी फुहारों का बेसब्री से इंतजार है। मानसून के बादल धीर-धीरे मध्य भारत व उत्तर की ओर बढ़ते जाएंगे। यह सुखद है कि हाल के वर्षों में मौसम विभाग की भविष्यवाणियां कमोबेश सच साबित होने लगी हैं। कहा गया था कि, इस वर्ष मानसून निर्धारित समय से पहले आ जाएगा, वैसा हुआ भी है। मानसून ने समय से पहले केरल में दस्तक देकर जन-जन को प्रफुल्लित कर दिया है। उम्मीद है कि जून के अंत तक मानसून उत्तर भारत को भिगोने लगेगा। ऐस वक्त में जब पारा नित नए रिकॉर्ड बनाता रहा है और लू से मरने वालों की संख्या बढ़ती रही है, मानसून की सूचना निश्चित रूप से राहतकारी कही जाएगी। यह निर्विवाद सत्य है कि मानसून के पास हमारी तमाम समस्याओं के समाधान हैं। खासकर धान का कटोरा कहे जाने वाले राज्यों के लिए तो यह जीवनदायिनी है। मानसूनी बारिश से जहां खेतों को पर्याप्त पानी से संतुष्टि मिलती है, वहीं बिजली व अन्य ऊर्जाओं की बचत भी होती है। गर्मी बढ़ते ही हमारे बिजली उत्पन्न करने वाली विभिन्न इकाइयों पर दबाव बढ़ जाता है। मानसून के आने से वह दबाव भी धीरे-धीरे कम होने लगता है।

इसमें दो राय नहीं है कि सदियों से मानसून देश में मौसम की विशिष्ट संस्कृति का पोषण करता है। आज भी मानसून हमारी कृषि व्यवस्था की रीढ़ है। मौसम की तल्खी को खत्म करके यह जन-जन को राहत देता है। विश्वास है कि हमारी संस्कृति व अर्थव्यवस्था में मानसून की निर्णायक भूमिका निरंतर जारी रहेगी। अनेक विदेशी लेखकों ने मानसून के प्रभावों का अध्ययन करते हुए रोचक साहित्य का सृजन भी किया है। मानसून का हमारे खान-पान व पहनावे तक पर गहरा प्रभाव पड़ता है। भले ही मानसून भारतीय समाज में सुखद बदलाव का पर्याय रहा हो, लेकिन हाल के वर्षों में मौसम के मिजाज में बदलाव से बारिश के पैटर्न में भी भिन्नता आई है। जिसके मूल में ग्लोबल वार्मिंग के प्रभाव भी शामिल हैं। विडंबना यह है कि हमारे नीति-नियंता और स्थानीय प्रशासनिक इकाइयां वर्षा जल को सहेजने में नाकाम रही हैं। मानसून के पानी का एक बड़ा हिस्सा यूं ही नदी-नालों के जरिये समुद्र में चला जाता है। यदि इस पानी को सहेजकर हम भू-जल का स्तर बढ़ाने का प्रयास युद्ध स्तर पर करें तो शेष महीनों में जल संकट से हम निजात पा सकते हैं। बढ़ती आबादी और जल निकासी के रास्तों पर निरंतर होते अतिक्रमण ने देश के तमाम शहरों में जलभराव का संकट पैदा किया है। पानी की निकासी के प्राकृतिक मार्गों पर अवैध निर्माणों ने इस संकट को बढ़ाया है। स्थानीय निकायों के अधिकारी नालों व सीवर लाइनों की सफाई समय रहते नहीं करते। जिसकी वजह से शहर व कस्बे जलभराव के संकट से जूझने लगते हैं। नागरिक हित में इस दिशा में गंभीर प्रयासों की जरूरत है। निःसंदेह मानसून न केवल हमारी कृषि की प्राणवायु है बल्कि हमारी अर्थव्यवस्था की रीढ़ भी है। सामान्य मानसून से जहां किसान व गांव समृद्ध होते हैं, वहीं देश को भी पर्याप्त खाद्यान्न मिल पाता है। हमें मानसून के जल को सहेजने के लिये जन-जन की भागीदारी से देशव्यापी मुहिम चलाने की जरूरत है। पिछले दिनों आग से सुलगते जंगलों को भी मानसूनी फुहारों का इंतजार है।

आर्थिकी के मजबूत होकर आगे बढ़ने की उम्मीदें

देश के आर्थिक परिदृश्य में शुभ संकेत दिखाई दे रहे हैं। हाल ही में केंद्रीय सांख्यिकी संगठन ने वर्ष 2023-24 में देश की विकास दर 8.2 फीसदी रहने संबंधी रिपोर्ट जारी की है। देश के शेयर बाजार फर्राटा भर रहे हैं। आर्थिक व वित्तीय बाजार मजबूत हो रहे हैं। वित्तीय और गैर वित्तीय क्षेत्रों के दमदार बही-खाते भारत की आर्थिक ताकत बढ़ा रहे हैं। रिजर्व बैंक द्वारा भारत सरकार को दिया गया रिकॉर्ड लाभांश, शेयर बाजार में निवेशकों का उत्साह और दुनिया की प्रमुख क्रेडिट रेटिंग एजेंसियों द्वारा भारत के विकास के प्रभावी विश्लेषण प्रस्तुत किए जा रहे हैं।

गौरतलब है कि हाल ही में वैश्विक क्रेडिट रेटिंग एजेंसी एसएंडपी ने मजबूत आर्थिक वृद्धि, तेज आर्थिक सुधार और बढ़ती राजकोषीय मजबूती के मद्देनजर भारत की रेटिंग को स्थिर यानी स्टेबल से बदलकर पॉजिटिव कर दिया है। रेटिंग एजेंसी का कहना है कि पिछले तीन साल में भारत के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) की औसत वास्तविक वृद्धि दर 8.1 फीसदी सालाना रही है और अब यह विकास दर अगले तीन साल में लगातार 7 फीसदी के करीब होगी। इन्वेस्टमेंट बैंकर गोल्डमैन सैक्स ने अपनी रिपोर्ट में 2024 में भारत की विकास दर को बढ़ाकर 6.7 प्रतिशत कर दिया है। अन्य महत्वपूर्ण नई रिपोर्टों के तहत अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष- आईएमएफ ने 6.8 प्रतिशत, एशियाई विकास बैंक- एडीबी ने 7 प्रतिशत तथा विश्व बैंक ने 7.5 प्रतिशत विकास दर रहने के अनुमान व्यक्त किए हैं।

विशेषज्ञों का मत है कि भारत की विकास दर आगामी दशक तक 6.5-7 प्रतिशत के स्तर पर दिखाई देगी। विभिन्न रिपोर्टों में रेखांकित किया जा रहा है कि भारत में वर्ष 2023-24 में प्रत्यक्ष कर संग्रह 17.7 फ़ीसदी बढ़कर 19.58 लाख करोड़ रुपए हो गया है। इसी तरह वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) उच्चतम स्तर पर रहा है। इसका आकार 20.18 लाख करोड़ रुपए रहा है, जो कि पिछले वर्ष की तुलना में 11.7 फ़ीसदी अधिक है। कर संग्रह के ये आंकड़े अर्थव्यवस्था में तेज उछाल और व्यक्तियों तथा कॉर्पोरेट सेक्टर की आमदनी में वृद्धि को दर्शाते हैं।

आरबीआई द्वारा हाल ही में सरकार के लिए अब तक के सबसे अधिक लाभांश की राशि सुनिश्चित की गई है,

वहीं दूसरी ओर शेयर बाजार में सूचकांक की जो रिकॉर्ड ऊंचाई दिखाई दे रही है, उससे दुनिया में भारत के नए तेज विकास की संभावनाएं आगे बढ़ी हैं। रिजर्व बैंक ने वित्त वर्ष 2023-24 में सरकार को 2.11 लाख करोड़ रुपये लाभांश देने की मंजूरी दी है जो बजट अनुमान की तुलना में 107 फीसदी ज्यादा है। यह सरकार के लिए मौजूदा वित्त वर्ष में 1.09 लाख करोड़ रुपये के अप्रत्याशित लाभ जैसा है। रिजर्व बैंक ने पहली बार आकस्मिक जोखिम बफर (सीआरबी) बढ़ाकर 6.5 फीसदी कर दिया गया है, जो पहले 6 फीसदी था।

रिजर्व बैंक द्वारा रिकॉर्ड लाभांश देने के निर्णय और वैश्विक आर्थिक संगठनों व क्रेडिट एजेंसियों के द्वारा 2024-25 में भारत की ऊंची विकास दर के अनुमानों के बाद भारतीय शेयर बाजार को लाभ मिला। बीएसई में सूचीबद्ध कंपनियों का कुल बाजार पूंजीकरण पांच लाख करोड़ डॉलर के पार पहुंचने के साथ ही भारत इस मुकाम तक पहुंचने वाला पांचवां सबसे बड़ा देश बन गया है। कोरोना के बाद भारतीय घरेलू खुदरा निवेशकों की रुचि शेयर बाजार में बढ़ी है। पिछले 10 साल में डीमेंट अकाउंट 2.3 करोड़ से बढ़कर 15 करोड़ हो गए हैं और म्यूचुअल फंड-निवेशकों की संख्या 1 करोड़ से 4.5 करोड़ हो गई। पिछले 10 पूर्व जो सेंसेक्स 25,000 अंकों पर था, आज 75,000 अंक से अधिक पर पहुंच गया। लाखों छोटे निवेशक बाजार से जुड़े हैं। भारत चौथा सबसे बड़ा शेयर बाजार है और वैश्विक निवेशकों का भरोसा भी इस पर बढ़ा है।

डॉ.जयंतीलाल भंडारी

ऐसी आर्थिक मजबूती से देश में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) में वृद्धि होगी। यह देश की उत्पादक क्षमता बढ़ाएगा और वृद्धि की संभावनाओं को बेहतर करेगा। ऐसे माहौल में न केवल देश में ज्यादा एफडीआई लाने में मदद मिलेगी, बल्कि यह विदेशी कंपनियों और निवेशकों को प्रोत्साहित करेगा कि वे भारत से हुई कमाई को फिर भारत में ही निवेश करें। इससे भारत में कारोबारी माहौल में सुधार होगा। यह सुधार घरेलू निवेशकों को भी बड़े पैमाने पर निवेश बढ़ाने के लिए प्रेरित करेगा। एफडीआई यानी विदेशी निवेशक तकनीकी विशेषज्ञता भी लाते हैं। चूंकि भारत लगातार चालू खाते के घाटे से जूझ रहा है और भारत को विदेशी बचतों को हासिल करने की जरूरत है, इसलिए एफडीआई विदेशी बचतों के सबसे टिकाऊ स्रोत के रूप में लाभप्रद होगा।

निश्चित रूप से वर्ष 2023-24 में भारत की विकास दर के 8.2 प्रतिशत रहने, शेयर बाजार के बढ़ने, रिजर्व बैंक द्वारा सरकार को बंपर लाभांश दिए जाने से सरकार को व्यय प्रबंधन में खासी मदद मिलेगी। फरवरी 2024 में संसद में पेश किए वित्त वर्ष 2024-25 के अंतरिम बजट में सरकार ने 5.1 प्रतिशत राजकोषीय घाटे का लक्ष्य रखा है वहीं वित्त वर्ष 2025-26 तक राजकोषीय घाटा जीडीपी के 4.5 प्रतिशत पर लाना चाहती है। पूंजीगत व्यय के लिए उपलब्ध धन बढ़ने से निश्चित रूप से राजकोषीय घाटे की गुणवत्ता को बल मिलेगा।

अब तो तुम भी काम धंधे पर लगो जी

आलोक पुराणिक

चुनाव निपट लिये जी, चुनावी डिबेट भी निपट जायेगी। महीनेभर से ज्यादा चली चाऊं-चाऊं, चक-चक। खटाखट, सफाचट, फटाफट, धकाधक, मंगलसूत्र, मुगल, औरंगजेब सब आ लिये चुनावी चक्कलस में। खटाखट जैसा शब्द पॉलिटिकल शब्द हो गया। पॉलिटिक्स कुछ भी कर सकती है। वैसे क्या बचा है अब जो पॉलिटिकल नहीं है। आप कहिये किसी से गर्मी बहुत है, तो क्या पता सामने वाला बंदा नाराज हो जाये और कह उठे कि क्या यह गर्मी सिर्फ मोदी ने करवायी है, पहले तो गर्मी होती ही नहीं थी। पहले तो दिल्ली हमेशा शिमला होता था। सिंपल-सी बात भी चुनावी गर्मी में पॉलिटिकल हो जाती है।

आप किसी से कहिये कि अब दिन बहुत बड़े हो गये हैं तो सामने से जवाब आ सकता है कि मोदीजी के नेतृत्व में सब कुछ बड़ा हो रहा है। सपने बड़े हो रहे हैं, परिणाम बड़े हो रहे हैं और दिन भी बड़े हो रहे हैं।

कुछ भी कहना खतरनाक हो गया है इन दिनों। समझ कर बोलने का वक्त था पर अब चुनाव निकल लिया है, किसी की नाव पार लगेगी, किसी की डूबेगी।

बहुतों के मुंह छिपाने के दिन आ रहे हैं, उन्होंने कहा था कि हर हाल में इस पार्टी को उतनी सीटें मिल रही हैं। उन्होंने कहा था कि उस पार्टी को इतनी सीटें नहीं मिलेंगी। बात झूठी साबित हो जायेगी, तो शर्म आयेगी। नहीं, नेताओं और राजनीतिक विश्लेषकों को शर्म नहीं आती। इनका पब्लिक की मेमोरी पर अपार विश्वास होता है। जनता कुछ याद नहीं रखती। जनता भी क्या क्या याद रखे। प्याज-आलू के भाव याद रखने में दिमाग का सारा मेमोरी स्पेस खत्म हो जाता है। कौन क्या कह गया, यह याद रखना संभव नहीं होता। फिर याद रख भी ले पब्लिक, तो भी क्या हो जायेगा। जो नेता कुछ महीने पहले कह रहा था कि यह वाली पार्टी तो देश को तबाह कर देगी, यह चुनाव हार जायेगी। कुछ वक्त बाद वही नेता इसी पार्टी में आ गया, जिसे वह तबाहकारी बता रहा था। पब्लिक क्यों याद रखे, जब कहने वाला नेता ही याद न रख रहा।

टेंट, जुलूस आन रेंट, कुर्ता, पेंट, इन सबके कारोबार खूब चले। आम आदमी ने बहुत टाइम वेस्ट किया, चुनावी चर्चा में। बहुत टाइम खर्चा किया, चुनावी चर्चा में।

अब भईया सब लगो अपने-अपने काम में। नेता तो कबसे काम पर लगे हुए हैं। कुमार साहब सिंह साहब से भिड़ गये थे कि वो नेता जीतेगा।

आखिर भाजपा के साथ मोदी भी हारे

आम चुनाव के नतीजे आने से पहले मैंने कहा था कि ये चुनाव 400 पार का नहीं बल्कि आर-पार का है। 4 जून 2024 को आये नतीजे ये प्रमाणित कर रहे हैं की मेरा अनुमान गलत नहीं था। भाजपा सबसे बड़ी पार्टी होते हुए भी इस बार अकेले बहुमत हासिल नहीं कर सके। 400 पार का नारा तो दूर की बात रही। भाजपा 370 धारा के सहारे प्रति बूथ 370 वोट बढ़कर अकेले दम पर 370 सीटें जितने के लिए खून पसीना बहाया था।

देश में नयी सरकार भाजपा के नेतृत्व वाले गठबंधन की बनेगी या कांग्रेस के नेतृत्व वाले गठबंधन की, ये आज मै नहीं कहने वाला। आज मै सिर्फ इतना कहता हूँ कि निवर्तमान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को देश की जनता ने ख़ारिज कर दिया है। भाजपा को जी कुछ हासिल हुआ है वो मोदी के नाम या चेहरे की वजह से नहीं बल्कि उन नेकरधारियों के श्रम की वजह से हासिल हुआ है जिन्हें नतीजे आने से ठीक पहले भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने कहा था कि भाजपा को संघ की जरूरत नहीं है।

देश के अभूतपूर्व प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में तीसरी बार सरकार बनेगी यी नहीं ये भाजपा और भाजपा के सहयोगी दलों को तय करना है। देश की जनता ने अपना मत दे दिया है कि उसे मोदी का न चेहरा देखना और न उनकी गारंटियों की उसे जरूरत है। इस चुनाव में मोदी हारे सो हारे बल्कि हिंदुत्व और सनातन की दरियादिली भी हारी। मोदी जी ने इस खासियत को संकीर्णता में बदलने की कोशिश की थी। कांग्रेस के राहुल गांधी की मोहब्बत की दूकान का शटर नीचे नहीं गिरा। उनकी दूकान खूब चली। 2024 के जनादेश ने भाजपा और मोशा की जोड़ी को पुनः मूषक बनने पर विवश कर दिया।

आम चुनाव में नतीजे अप्रत्याशित आते रहते हैं लेकिन वे इतने अप्रत्याशित नहीं होते की उत्तर प्रदेश जैसे बुलडोजर संहिता वाले राज्य में ही मतदाताओं ने बुलडोजर चला दिया। भाजपा की दाढ़ से ज्यादा मोशे की दाढ़ में सत्ता का खून लग चुका है इसलिए भाजपा और मोशा आसानी से सत्ता छोड़ने वाले नहीं है। वे चंद्र बाबू नायडू के साथ ही वे किसी भी क्षेत्रीय दल के साथ गठजोड़ कर सकते हैं। मुझे निवर्तमान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के प्रति पूरी सहानुभूति है, क्योंकि वे बहुमुखी प्रतिभा के धनी है। वे कामयाब अभिनेता है। वक्ता हैं, बहुरूपिये हैं, मदारी हैं। उनके जैसा कोई दूसरा नहीं है। लेकिन वे पंडित जवाहर लाल नेहरू बनते-बनते रह गए। चुनाव नतीजों ने बता दिया कि उनकी लोकप्रियता सातवें आसमान को नहीं छू पायी है। मुझे लगता है कि आम चुनाव के नतीजों के बाद अब एक बार फिर भाजपा की चाल, चरित्र और चेहरा फिर से बदलेगा। भाजपा को और संघ को ये करना ही पड़ेगा। भाजपा के रणनीतिकार यदि ऐसा नहीं करेंगे तो आप देखेंगे कि आने वाले दिनों में भाजपा की हालत ठीक वैसी ही होगी जैसी पिछले दशक में कांग्रेस की हुई थी।

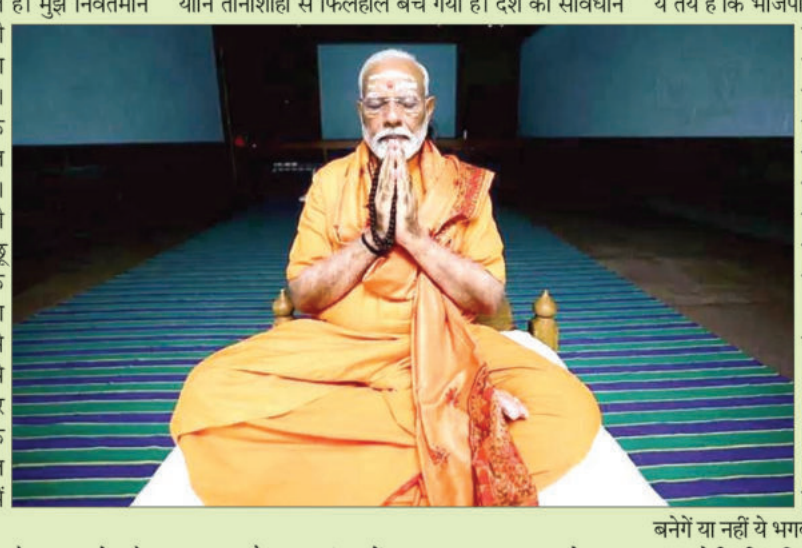

वर्ष 2024 के आम चुनाव में कांग्रेस के अलावा देश के अनेक क्षेत्रीय दलों ने कुछ खोया नहीं है बल्कि हासिल ही किया है। ओडिशा की बीजू जनता दल इसका अपवाद है। भाजपा को न दो-दो मुख्यमंत्रियों को जेल में डालने कोई लाभ नहीं मिला। भाजपा को पंजाब में कुछ नहीं मिला। वहां कांग्रेस फिर से अंकुरित हो गयी। भाजपा का नुक्सान दिल्ली में भी हुआ और पंजाब में भी। लेकिन आम आदमी की भूमिका देश का राजनैतिक माहौल बदलने में कम नहीं हो जाती। बिहार में भले ही राजद अपेक्षित परिणाम नहीं दे सके लेकिन उनका हौसला आईएनडीआईऐ के काम आया।

नयी सरकार में कौन प्रधानमंत्री होगा या नहीं ये अलग मुद्दा है ,लेकिन ये साफ़ हो गया है कि देश मोदी जी मनमानी यानि तानाशाही से फिलहाल बच गया है। देश का संविधान बच गया है। अल्पसंख्यकों का आरक्षण बच गया। देश का 20 करोड़ मुसलमान बन बच गया। देश का भाईचारा बच गया। देश मंदिर-मस्जिद के विवाद से बच गया। अब भाजपा को राम का नहीं कृष्ण का आसरा लेकर भविष्य की राजनीति करना पड़ेगी। अपना नेता बदले बिना भविष्य की राजनीति नहीं कर सकती। भाजपा यदि नरेंद्र मोदी के नाम पर अड़ी रही तो भाजपा का भट्टा बैठ जाएगा। भाजपा ने पिछले दस साल में भाजपा ने जिस तरह से आपरेशन लोटस और आपरेशन झाड़ू चलाया उससे भाजपा को लाभ होने के बजाय नुक्सान हुआ।

अगले 48 घंटे में देश की राजनीति का ऊँट किस करवट बैठेगा कोई नहीं बता सकता। मै भी नहीं बता सकता। लेकिन ये तय है कि भाजपा के नेतृत्व में यदि नयी सरकार बनती है तो उसकी उम्र और शक्ति पहले जैसी नहीं होगी। भाजपा की जो दुर्दशा आज हुई है उससे ज्यादा दुर्दशा कांग्रेस की अतीत में हो चुकी है। तमाम विसंगतियों कि बावजूद भाजपा सबसे बड़ी पार्टी है इसलिए जाहिर है कि राष्ट्रपति सबसे पहले भाजपा और उसके नेतृत्व वाले गठबंधन को सरकार बनाने का निमंत्रण देगीं। मुमकिन है की तोड़फोड़ में माहिर भाजपा आखिर तक हार न माने और सरकार बनाने लायक संख्या जुटा ले ,लेकिन भाजपा की सरकार अब न 2029 का सपना पूरा कर पायेगी और न 2047 का भारत बना पाएगी। क्योंकि अब नयी सरकार में मोदी जी की गरज पहले जैसी नहीं होगी। वे प्रधानमंत्री बनेगें या नहीं ये भगवान जानता है ,लेकिन मै ये जानता हूँ कि अब मोदी जी अविनाशी नहीं रह पाएंगे। उनके अवतार को आज नहीं तो कल चुनौतियाँ मिलेंगी।

नयी सरकार अब देश का अतीत नहीं बदल पायेगी। भूगोल नहीं बदल पाएगी, अर्थशास्त्र नहीं बदल पायेगी ऐसे में भविष्य कैसे बदलेगी कहना कठिन है। ये चुनाव परिणाम इस बात के भी द्योतक हैं की इस देश में न कोई पप्पू है और न कोई शाहजादा और न उसकी भाषा नक्सलियों की भाषा है। विपक्ष के हर नेता की भाषा देश की जनता समझती है। यदि राहुल की भाषा नक्सलियों जैसी होती तो वे भी उसी तरह ख़ारिज कर दिए जाते जिस तरह मोदी जी को खारिज किया गया है।

नयी सरकार में जो भी प्रधानमंत्री बने उसे हमारी और से अग्रिम शुभकामनायें। नई सरकार से एक ही अपेक्षा है कि वो देश को उस तरह से न हाँके जैसे की माननीय मोदी जी हाँक रहे थे। मोदी जी भी यदि सचमुच तीसरी बार प्रधानमंत्री बनें तो अपने आपको बदल लें। यही उनके हित में है। उनकी पार्टी कि हित में है। उनके गठबंधन कि हित में है। क्योंकि इस देश में न तानाशाही कि लिए गुंजाईश है और न हिटलरशाही के लिये। यहां लोकशाही ही चलेगी। यहां गांधीवाद ही चलेगा। यहां मंदिर बनाकर जनता की आँखों में धूल नहीं झोंकी जा सकती। ये बात खुद अयोध्या ने ही प्रमाणित कर दी है। राम जी ने भी भाजपा की तरफ से मुंह मोड़ लिया है।

राकेश अचल

इस आम चुनाव में बीजद भी हारी और बसपा भी ,लेकिन समाजवादी पार्टी आगे बढ़ी है । राजद बढ़ी है। कांग्रेस आगे बढ़ी है। एनसीपी और शिवसेना (ठाकरे ग्रुप) भी आगे बढ़ा है देश कि तमाम राजाओं ने जहाँ की भाजपा की डबल इंजिन की सरकारें हैं ने भी भाजपा को अस्वीकार कर दिया है। दिल्ली ने जरूर भाजपा का साथ दिया। इसके लिए दिल्ली को साधुवाद देना चाहिए। साधुवाद तो ओडिशा को भी देना चाहिए क्योंकि यहां भाजपा कि प्रवक्ता संविद पात्रा ने मोदी जी की तुलना में भगवान जगन्नाथ को छोटा बता दिया था, लेकिन लगता है की भगवान जगन्नाथ ने भाजपा को माफ़ कर दिया। इस चुनाव में सबसे बड़ी बात ये हुई की गोदी मीडिया कि चेहरे पर सबसे करारा तमचा पड़ा। गोदी मीडिया कि तमाम एक्जिट पोल औंधे गिर गए।

आरिफ खान, ऐसा काम न करो अपनी जेब गर्म करने के चक्कर में कलेक्टर ही बदनाम हो

माही की गूंज, शुजालपुर।
अजय राज केवट

शुजालपुर क्षेत्र में अवैध उत्खनन रुकने का नाम ही नहीं ले रहा है। जिले में बैठे घूसखोर आधिकारी आरिफ खान मोटी रिश्वत के चलते अवैध तरीके से जिले भर में अवैध खनन करवा कर अपने बच्चों का भविष्य सुधारने में लगा हुआ है। जहां देखो वहां खनन माफिया बेधड़क, बेखौफ होकर खुदाई कर रहे है। शुजालपुर स्थित ग्राम रानोगंज में नेवज नदी का चिरहरण कर व हरे पेड़ों को काट कर नदी के साइड वाली जमीनों से मिट्टी व रेत को पोकलेन, जेसीबी, डंपर की मदद से मनमाने भाव बेच रहे है। जिससे राजस्व में भी भारी नुकसान होकर माफिया लोग भ्रष्ट निक्कमे आरिफ खान के साथ मिलकर शासन को लाखों रुपये का चुना लगा रहे।

कलेक्टर रिजु बाफना क्यों नही करती कार्रवाई...?

जिले में अपनी अलग ही पहचान बनाकर कर हर अपराध को जड़ खत्म करने का फैसला लेने वाली कलेक्टर रिजु बाफना रेत माफिया व आरिफ खान पर क्यों मेहरबान है...? ये भी आम जनता के मुंह पर चर्चा का विषय बना हुआ है। क्या कलेक्टर मैडम को शुजालपुर जाते समय अवैध खनन माफिया नहीं दिखते हैं या फिर काले चश्में के आगे सब अंधा कानून बना हुआ है।

एसडीएम भी कार्रवाई के नाम पर चुप्प क्यों...?

शुजालपुर में एसडीएम अर्चना कुमारी आईएस होने के बाबजूद भी अवैध खनन माफिया पर रोक लगाने में नाकाम साबित हो रही है। आखिर एसडीएम अर्चना कुमारी किस राजनीतिक दबाव के चलते माफियाओं पर कार्यवाही नहीं कर पा रही और नदी किनारे की निजी भूमि की भी खुदाई हो रही है। क्या खनन माफिया को लेकर पटवारियों के द्वारा कोई ताल मेल तो नहीं...?

मंत्री परमार के गढ़ में माफियाओ के हौसले बुलंद

शुजालपुर विधानसभा में होनहार लगन शील मंत्री इंदर सिंह परमार का नाम बदनाम कर माफिया लोग अधिकारियों पर अपनी नेता नगरी की छत्र छाया को लेकर ईमानदार मंत्री की छवि को धूमिल करने में कोई कसर नहीं छोड़ रहे है। शहर की जनता का कहना है कि, क्या मंत्री जी का माफिया पर हाथ है...? मगर ऐसा बिल्कुल नहीं है। क्षेत्र के ईमानदार मंत्री जी के नाम को लेकर माफिया अपना जंगल राज चलाने जानते हैं।

खनन माफिया के डंफर से एक की मौत

शुक्रवार संदीप पिता कमल सिंह मेवाड़ा अपने गांव कोहलिया से अपनी मां को इलाज के लिऐ शुजालपुर लेकर संदीप मेवाड़ा आया हुआ था। जब पैसों की जरूरत लगने पर एसबीआई बैंक के एटीएम से पैसे निकाल कर जा रहा था तभी रांग साइड से आ रहा डंफर ने बाइक सवार को कुचल कर मौके से फरार हो गया। जिससे कोहलीया निवासी संदीप मेवाडा की मौके पर मौत हो गई और रोजाना ये अवेध डंफर शुजालपुर शहर वासियों के लिऐ मौत का तांडव लिऐ गली-गली घूम रहे है।

मुखबरी करने में माहिर है घूसखोर आरिफ खान

पत्रकार अपनी कलम के माध्यम से जिले के भ्रष्ट अधिकारियों की काली करतूतों को उजागर कर शहर की जनता व वरिष्ठ अधिकारीयो घूसखोर अधिकारियों को बेनकाब कर उसकी सच्चाई को दिखाता है। मगर रिश्वत की राशि को अपने बाप की बपौती समझ कर माफियाओ से आने वाली महाबंदी के चंद टुकड़ों के लिऐ पत्रकारों की सूचना माफियो को देकर पत्रकारो की जान को खतरे में डालने का काम घूसखोर आरिफ करता हे। अगर कोइ पत्रकार या आम नागरिक किसी अवेध खनन की सूचना आरिफ खान को देता है तो आरिफ खान अपनी कुंडित बुद्धि का उपयोग कर पत्रकार के नाम नम्बर सब माफिया को भेज देता है। जिससे पत्रकारों की जान को खतरा बना रहता है।

भाजपा नेता ने तोड़ा अपना ही रिकॉर्ड

माही की गूंज, मंदसौर।

मंदसौर लोकसभा सीट पर भाजपा प्रत्याशी सुधीर गुप्ता ने जीत की हैट्रिक लगाई है। बता दें कि यहां पर भाजपा के सुधीर गुप्ता का मुकाबला कांग्रेस के दिलीप सिंह गुर्जर से था। इस सीट पर कुल आठ प्रत्याशी मैदान में थे। वहीं, कुल 18 लाख 98 हजार 60 वोटर में से 14 लाख 28 हजार 383 ने मतदान हुआ था। इसमें से भाजपा को 9 लाख 42 हजार 249 वोट मिले। जबकि कांग्रेस प्रत्याशी को महज 4 लाख 43 हजार 622 वोटों से ही संतोश करना पडा। इस प्रकार भाजपा के सुधीर गुप्ता ने ईवीएम के मतों में 4 लाख 98 हजार 627 मतों से विजय हासिल की वहीं डाक मत पत्रों में उन्हें 3512 मत और दिलिपसिंह गुर्जर को 1484 मत मिलें डाक मत पत्रों में 2028 मतों से विजय हासिल की इस प्रकार सुधीर गुप्ता ने 5 लाख 655 मतों से विजय हासिल की। इसके बाद सांसद सुधीर गुप्ता विजय जुलुस भी निकला।

कांग्रेस प्रत्याशी ने फोडा ईवीएम पर ठीकरा

मतगणना के दौरान कांग्रेस प्रत्याशी दिलीप सिंह गुर्जर ने ईवीएम में गड़बड़ी की आशंका जताई और निर्वाचन अधिकारी से शिकायत दर्ज करवाई। उन्होंने कहा कि वर्तमान भाजपा सांसद का बहुत विरोध था ईवीएम की बैटरी 98 प्रतिशत पाई गई है। जबकि कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने इसकी रीडिंग की थी तब 54 से 75 प्रतिशत तक थी। हमारे कार्यकर्ताओं ने आपत्ति भी जताई, लेकिन उनकी कोई सुनवाई नहीं हुई।

इस पर भाजपा प्रत्याशी सुधीर गुप्ता ने कहा कि, वे (कांग्रेसी) जहां-जहां जीते वहां की ईवीएम का भी रिकॉर्ड भी लाकर सामने रखे तो ज्यादा अच्छा रहेगा। आरोप लगाना बहुत आसान है। तीसरी बार हम मोदी के नेतृत्व में सरकार बनाने जा रहे हैं। आपने कहा कि मैं जनता को धन्यवाद देता हूं। कार्यकर्ताओं के प्रयासों से जीत मिली है।

शुरूआत से बढत बनाते चलें भाजपा प्रत्याशी

सुबह 8 बजे से मतगणना शुरू हुई तब से राउंड दर राउंड भाजपा प्रत्याशी लीड बनाते चले गये मंदसौर संसदीय क्षेत्र की आठों विधानसभा मंदसौर जिले की मंदसौर, मल्हारगढ, सुवासरा और गरोठ नीमच जिले की नीमच, मनासा, जावद और रतलाम जिले की जावरा विधानसभा की मतगणना के दौरान एक भी राउंड में कांग्रेस के प्रत्याषी बढत नही बना सकें। पहले राउंड से लेकर अंतिम राउंड तक भाजपा के प्रत्याशी बढत में रहें।

पुलिस व्यवस्था रही चाक चौबंध

मतगणना के दौरान मतगणना स्थल शासकीय महाविद्यालय पर पुलिस व्यवस्था चाक चैबंध रही। बडे अधिकारियों से लेकर पुलिस कर्मचारी सर्तकता से तैनात रहें, मतगणना के दौरान कोई अप्रिय घटना नहीं हुई।

डिप्टी सीएम ने भाजपा कार्यालय में बैठ देख नतीजे

प्रदेश के डिप्टी सीएम जगदीश देवडा ने मंदसौर में भाजपा कार्यालय में बैठ चुनावी नतीजे देंखे। उनके साथ मंदसौर से भाजपा प्रत्याषी सुधीर गुप्ता, भाजपा जिलाध्यक्ष नानालाल अटौलिया, सुवासरा विधायक हरदीपसिंह डंग एवं भाजपा कार्यकर्ता मौजूद थे।

लोकसभा चुनाव 2024 में बने 3 रिकॉर्ड

इंदौर। मध्य प्रदेश की सभी 29 सीटों पर जीत दर्ज कर भाजपा ने नया रिकॉर्ड बनाया है। लेकिन इस क्लीन स्वीप की सबसे बड़ी जीत इंदौर में दर्ज हुई है। भाजपा प्रत्याशी शंकर लालवानी ने निकटतम प्रतिद्वंदी को 11 लाख 75 हजार 92 वोटों से हराया है। लेकिन इसी इंदौर में एक और रिकॉर्ड भी बना और वो रिकॉर्ड नोटा को मिले सबसे ज्यादा वोटों का है। हालांकि, देश में सबसे ज्यादा वोट भी शंकर ललवानी को ही मिले हैं जो कि एक और रिकॉर्ड है।

इंदौर सीट पर नोटा को 2 लाख 18 हजार 674 वोट मिले हैं जो कि एक नया रिकॉर्ड है। इससे पहले 2019 के लोकसभा चुनाव में बिहार के गोपालगंज में नोटा को 51 हजार 660 वोट मिले थे। ऐसे में रिकॉर्ड के लिए पहचान रखने वाले इंदौर ने एक और रिकॉर्ड अपने नाम कर लिया।

सबसे बड़ी जीत का रिकॉर्ड

इंदौर ने एक और रिकॉर्ड बनाया और वो है देश में सबसे बड़ी जीत का। दरअसल, भाजपा के सामने यहां कोई चुनौती नहीं थी और माना जा रहा था कि भाजपा यहां बड़े अंतर से जीतेगी लेकिन जब नतीजा आया तो वो देश में सबसे ज्यादा अंतर से जीत का रिकॉर्ड बना गया। भाजपा के शंकर ललवानी ने यहां 11 लाख 75 हज़ार 92 वोटों के अंतर से बहुजन समाज पार्टी के प्रत्याशी को हरा दिया। सिर्फ यही नहीं, देश में किसी एक उम्मीदवार को सबसे ज्यादा वोट मिलने का रिकॉर्ड भी ललवानी के नाम ही रहा, जिन्हें 12 लाख 26 हज़ार 751 वोट मिले।

मेडिकल परीक्षण के लिए सिविल अस्पताल में 12 घंटे भटकती रही दुष्कर्म पीड़िता

माही की गूंज, शाजापुर।

शाजापुर जिला अंतर्गत शुजालपुर सिविल अस्पताल में तीन महिला चिकित्सक होने के बावजूद दुष्कर्म पीड़िता मेडिकल परीक्षण करवाने के लिए 12 घंटे तक भटकती रही। रात दो बजे के बाद जिला मुख्यालय पर उसका मेडिकल परीक्षण हो सका।

पुलिस अधिकारियों द्वारा मामला संज्ञान में लाने के बाद सीएमएचओ डॉ. अजय साल्विया ने अस्पताल प्रभारी से जवाब मांगा, तो इससे नाराज शुजालपुर सिविल अस्पताल के वर्ग एक के सात चिकित्सकों ने सामूहिक इस्तीफा दे दिया। इनमें डा. विपिन जैन, डॉ. रविंद्र गुप्ता, डॉ. रामसलोने मिश्रा, डॉ. प्रेमलता कछोरिया, डॉ. सपना पाटीदार, डॉ. भूपेंद्र परमार व डॉक्टर प्रवीण द्विवेदी शामिल हैं।

सीएमएचओ ने पीड़िता के मामले में शुजालपुर अस्पताल प्रभारी को नोटिस जारी करके पूछा कि पीड़िता का परीक्षण न कर उसे जिला मुख्यालय पर रैफर करके उसके प्रति असंवेदनशील व्यवहार किन परिस्थितियों में किया गया? मामले के बाद सिविल अस्पताल शुजालपुर के सभी वर्ग एक या दो श्रेणी के चिकित्सा अधिकारियों की आकस्मिक चिकित्सा ड्यूटी लगाने के निर्देश दिए गए हैं।

नोटिस में वर्ग एक या दो के चिकित्सा अधिकारियों की आकस्मिक चिकित्सा ड्यूटी लगाने के भी निर्देश लिखे थे। इमरजेंसी ड्यूटी लगने से नाराज क्लास एक के सात चिकित्सकों ने सामूहिक इस्तीफा अधिकारियों को भेज दिया। इस्तीफा में उल्लेख किया गया कि चिकित्सालय में आपातकालीन चिकित्सा ड्यूटी पदस्थ चिकित्सा अधिकारियों की लगाई जानी होती है। कमी होने पर प्राथमिक व सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के पदस्थ चिकित्सा अधिकारियों की ड्यूटी लगाई जाना चाहिए।

यह था मामला

दुष्कर्म पीड़िता को चिकित्सीय परीक्षण के लिए 24 मई को दोपहर करीब दो बजे शुजालपुर मंडी स्थित सिविल अस्पताल में लाया गया था, लेकिन यहां चिकित्सा परीक्षण नहीं किया गया। हैरत यह कि शुजालपुर सिविल अस्पताल में तीन महिला चिकित्सक होने के बावजूद पीड़िता को अकोदिया और पोलायकलां के लिए रैफर कर दिया गया। शुजालपुर एसडीओपी पिंटू बघेल के अनुसार, पीड़िता के साथ महिला पुलिसकर्मी भी रात दो बजे मेडिकल परीक्षण होने के बाद तक परेशान होती रहीं।

इनका कहना है

मामले में डॉ. अजय साल्विया सीएमएचओ शाजापुर का कहना है कि, सिविल अस्पताल शुजालपुर में तीन महिला चिकित्सक होने के बावजूद दुष्कर्म पीड़िता मेडिकल परीक्षण के लिए 12 घंटे तक भटकती रही। किन परिस्थितियों में पीड़िता को रैफर किया, इस बारे में अस्पताल प्रभारी को नोटिस जारी कर जवाब मांगा था। नोटिस समझने में गलती हो गई। सभी चिकित्सकों को समझाया गया है कि आगे से ऐसी पुनरावृत्ति न होने पाए।

बेटों ने पिता को दी अनोखी श्रद्धांजलि

माही की गूंज, रतलाम।

देश के सर्वाधिक गर्म शहरों में शुमार रतलाम में अब पर्यावरण को बचाने के लिए लोग आगे आ रहे हैं। शहर में आज ऐसी ही एक पहल देखने को मिली। जब पिता की स्मृति को संजोने के लिए बेटों ने उनके श्रद्धांजलि कार्यक्रम में 400 से ज्यादा पौधे बांटे है। प्रसिद्ध समाजसेवी स्वर्गीय कांतिलाल जी मंडलेचा की स्मृति में उनके परिवार ने पर्यावरण बचाने का संदेश दिया है।

परिजनों ने पिता के श्रृद्धांजलि कार्यक्रम में पधारे सभी लोगों को 400 से ज्यादा पौधों का वितरण किया है। ताकि लोग पेड़ लगाए और पर्यावरण बचाएं। दरअसल देश के सर्वाधिक तापमान वाले शहरों में रतलाम का नाम भी शामिल है ऐसे में अब लोग पर्यावरण को बचाने के लिए तरह-तरह के जतन कर रहे हैं। शहर के तापमान को कम करने के लिए लोग अब आगे भी आ रहे हैं।

समाजसेवी संगठन, लोगों से पेड़ लगाने की अपील कर रहे हैं। वहीं कुछ लोग अब पारिवारिक कार्यक्रमों में जनता को पौधे बांटकर पर्यावरण बचाने की सीख दे रहे हैं। समाजसेवी कांतिलाल मंडलेचा का कुछ दिनों पहले ही हार्ट अटैक से निधन हुआ था। जिसके बाद परिजनों ने उनकी स्मृति को संजोने और पर्यावरण को बचाने के लिए पौधे बांटकर यह अनूठी पहल कि है।

आकाशीय बिजली गिरने से एक की मौत

माही की गूंज, राजगढ़ (ब्यावरा)। लीमाचौहान थाना क्षेत्र में आकाशीय बिजली गिरने से खेत पर काम कर रहे 40 वर्षीय मजूदर की मौत हो गई। वहीं एक व्यक्ति गंभीर रुप से जख्मी हो गया, जिसे शाजापुर रेफर किया गया। पुलिस ने पोस्टमार्टम के बाद शव परिजनों को सौंपा और मर्ग कायम कर जांच शुरु की।

पुलिस के अनुसार लीमाचौहान से कुछ दूरी पर स्थित खेत में काम करने के दौरान आकाशीय बिजली की चपेट में आने से हेमराज (40) पिता गोपीलाल लववंशी की मौके पर ही मौत हो गई। वहीं धरमसिंह पुत्र बद्रीलाल खाती गंभीर रुप से जख्मी हो गया, जिसे प्राथमिक उपचार के बाद शाजापुर रेफर किया गया। बताया गया है कि, दोनों खेत पर काम कर रहे थे तभी अचानक मौसम में बदलाव हुआ और बारिश से बचने के लिए दोनों पेड़ के नीचे पहुंचे तभी आकाशीय बिजली गिरने हेमराज की मौके पर ही मौत हो गई। पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरु की।

झूठा निकला पेट्रोल पंप मालिक के साथ हुई लूट का मामला

माही की गूंज, रतलाम।

ग्राम मावता स्थित पेट्रोल पंप के मैनेजर (सह संचालक) नीलेश राठौड़ से बैंक में रुपये जमा कराने जाते समय 4 बदमाशों द्वारा लाखों रुपये लूटने का मामला झूठा निकला। पुलिस ने मामले की जांच कर 12 घंटे के भीतर आरोपित नीलेश द्वारा गढ़ी गई झूठी कहानी का पर्दाफाश कर दिया।

नीलेश के साथ लूट की वारदात नहीं हुई, बल्कि उसने अमानत में खयानत व धोखाधड़ी करने के लिए अपने चार अन्य साथियों के साथ मिलकर लूट की झूठी कहानी रची थी। मामले में आरोपित नीलेश व उसके साथियों के खिलाफ विभिन्न धाराओं में प्रकरण दर्ज कर उन्हें गिरफ्तार कर लिया है।

पुलिस के अनुसार, ग्राम मावता में स्थित ऋषि किसान सेवा पेट्रोल पंप के संचालक 28 वर्षीय नीलेश राठौड़ पुत्र किशनलाल राठौड़ निवासी ग्राम रणायरा ने पुलिस में शिकायत की थी कि वे 3 जून को सुबह पेट्रोल पंप से बैग में 10 लाख 56 हजार रुपये लेकर बाइक पर सवार होकर कालूखेड़ा स्थित बैंक में जमा कराने के लिए जा रहे थे। तभी रास्ते में नवेली-बगीया मार्ग पर वे नवेली के पास स्थित मुक्तिधाम मोड दो बाइकों पर आए चार नकाबपोश बदमाश उससे रुपयों से भरा बैग लूटकर भाग गए थे। खबर फैलते ही क्षेत्र में सनसनी फैल गई थी। जावरा सीएसपी दुर्गेश आर्मो व कालूखेड़ा थाना प्रभारी संतोष चौरसिया सहित कई अधिकारियों ने मौके पर पहुंचकर जांच की। मौके पर डाग स्क्वाड भी बुलाया गया था। पुलिस के अनुसार घटना स्थल पर प्राप्त साक्ष्य व नीलेश द्वारा बताई घटना मे काफी भिन्नता होकर संदेह उत्पन्न हुआ।

एसपी राहुल कुमार लोढा के निर्देशन व एएसपी राकेश खाखा के मार्गदर्शन में सायबर सेल की टीम ने तकनीक साक्ष्यों का अवलोकन कर घटना स्थल से लगे हुए मार्गों एवं गांवों के आसपास के सीसीटीवी फुटेज का अवलोकन किया और पेट्रोल पंप पर कार्यरत कर्मचारी व ग्रामीणों से पूछताछ की।

जांच में पाया गया कि नीलेश राठौड़ पर चार-पांच लाख रुपये का कर्ज था और पंप पर कुल 8 लाख 17 हजार रुपए थे, जबकि नीलेश ने 10.56 लाख रुपए लूटना बताया था। वहीं पेट्रोल पंप संचालक दिनेश दिया ने नीलेश राठौर पर गबन करने की शंका जाहिर की।

जांच में पाया गया कि नीलेश ने कर्जा चुकाने व पंप की राशि का गबन करने के लिए अपने साथी आरोपित 34 वर्षीय चिमन पादीदार पुत्र बंशीलाल पाटीदार, 32 वर्षीय आजाद शाह पुत्र मोहम्मद शाह व 26 वर्षीय आबिद शाह उर्फ गोलू पुत्र सुल्तान शाह तीनों निवासी ग्राम मावता तथा 22 वर्षीय कन्हैयालाल कुमावत उर्फ कान्हा पुत्र भंवरलाल कुमावत निवासी ग्राम बेहपुर थाना भावगढ जिला मन्दसौर के साथ मिलकर लूट की झूठी कहानी रची थी। इसके बाद नीलेश व उसके साथियों को गिरफ्तार कर लिया गया।

दो बाइक व 8.17 लाख रुपये जब्त

पुलिस के अनुसार, जांच के दौरान पंप संचालक दिनेश दिया ने रुपयों का गबन करने व धोखाधड़ी कर झूठी कहानी रचने के संबंध में लिखित में आवेदन दिया था। आरोपित नीलेश व उसके साथियों के खिलाफ भादंवि की धारा 409, 420, 424, 203, 120 बी के तहत प्रकरण दर्ज किया गया है। पूछताछ में नीलेश ने पुलिस को लूट की झूठी सूचना देकर पंप की राशि गबन कर आरोहित कन्हैयालाल कुमावत उर्फ कान्हा के घर पर छिपाना बताया। आरोपितों के कब्जे से 8.17 लाख रुपये व घटना में प्रयुक्त दो बाइक भी जब्त कर ली गई है।

नगरीय सीमा में स्पीड ब्रेकर को लेकर सीएमओ ने झाड़ा पल्ला, एसडीएम ने कहा निर्देश देंगे

रहवासियों ने स्पीड ब्रेकर लगाने दिया आवेदन

माही की गूंज, थांदला।

नगर के मुख्य मार्ग जहाँ दो स्कूल, खेल का मैदान व अन्य कॉलोनी में जाने के रास्तें निकल रहे है, जहाँ पहले से ही स्पीड ब्रेकर लगे हुए थे वहाँ पुनः स्पीड ब्रेकर लगाने की मांग इंद्रपुरी रहवासी कर रहे है। एसडीएम व नगर परिषद को दिए आवेदन के अनुसार रहवासियों का कहना है कि मेघनगर झाबुआ तक (टु लेन) हाईवे पर कई सारे अमानक स्पीड ब्रेकर बने हुए थे जिस कारण आम व्यक्ति बुजुर्ग आदि को अमानक स्पीड ब्रेकर के कारण स्लीप डिस्क कमर दर्द आदि समस्याओं का सामना करना पडता था साथ ही थांदला से झाबुआ आने जाने में काफी समय भी लगता था जिस कारण जन सुविधा के लिए अत्यधिक मात्रा में बने अमानक स्पीड ब्रेकर को हटाया दिया गया जो सराहनीय है। लेकिन सभी स्पीड ब्रेकर हटाने की बजाय अनावश्यक स्पीड ब्रेकर ही हटाये जाने चाहिए थे। थांदला नगर में बायपास चौराहें पर जहाँ से एक रास्ता गुजरात राजस्थान कि ओर जाता है, दूसरा अस्पताल व नगर में, तीसरा नगर के मुख्य स्कूलों व शासकीय संस्थाओं तथा झाबुआ जाता है तथा चौथा रास्ता बस स्टैंड व पेटलावद कि ओर जाता है उस चौराहे पर व सीएम राईज व पीएमश्री स्कुल, दशहरा मैदान व अन्य कॉलोनी को जोड़ने वालें स्थान पर

अत्यधिक ट्राफिक होने की वजह से दुर्घटनाओं का अंदेशा बना रहता है वहाँ स्पीड ब्रेकर की अत्यंत आवश्यकता है जिसे जल्द लगाया जाना चाहिए। इस मार्ग पर ही नगर पालिका, एसडीएम कार्यालय, तहसील कार्यालय, न्यायालय, पीएमश्री स्कुल, तेज गति के वाहनों व अन्य राहगीरों का सीएम राईज स्कुल, जनपद भवन, एमपीईबी आदि अनेक शासकीय विभाग है जहाँ नगर सहित ग्रामीणों की आवाजाही तथा स्कूली बच्चों व सुबह शाम ग्राउंड पर टहलने वालें नागरिकों व खिलाड़ियों का आवागमन सतत बना रहता है ऐसे में इस अंतरराज्यीय मार्ग पर वाहनों का भी खासा दबाव होने से इन सबके दुर्घटनाग्रस्त होने व जान जाने का खतरा भी बना रहता है। बीते दिनों इसी मार्ग पर इसी स्थान पर दो विभिन्न दुर्घटनाओं में एक को अपनी जान भी गवानी पड़ी थी। कॉलोनी वासियों ने कहा कि ऐट लेन कम्पनी द्वारा उस दुर्घटना के बाद रोड़ पर कुछ स्थानों पर पीली व सफेद पट्टिया लगाई गई है, किंतु उससे तेज रफ्तार से चल रहे वाहनों पर कोई असर देखने को नही मिल रहा है। ऐसे में रहवासियों ने इन स्थानों में खासकर बायपास चौराहा व स्कूल वालें स्थान पर मानकाधार पर स्पीड ब्रेकर बनाकर नगर जनों के साथ करीब 3 हजार स्कूली बच्चों के दुर्घटना भय को दूर करने का आग्रह किया है।

बारहवें पर परिजनों ने गोशाला में दान किए 51 हजार रुपए

माही की गूंज, पेटलावद।

सामाजिक जागरुकता के कारण कुरीतियों के चलते परिवार में विभिन्न अवसरों पर अनावश्यक खर्च करने की बजाय समाज सेवा के अलावा गोसेवा में लगाने की दिशा में अग्रसर हो रहे है। पेटलावद क्षेत्र के ग्राम बरवेट के समाजसेवी शंभूलाल प्रजापति का 103 वर्ष की आयु में कुछ दिनों पूर्व निधन हो गया था। जिसके बारहवें पर उनके परिजनों ने 51 हजार रुपए नकद श्रीकृष्ण कामधेनु गोशाला बनी को दान दिए है। इससे न केवल निराश्रित गोवंश को हरा चारा उपलब्ध हो सकेगा बल्कि क्षेत्र के लोगों प्रेरणा भी मिलेगी। जिसको लेकर बुधवार को पगड़ी रस्म के दौरान हजारों को संख्या में उपस्थित समाज जन ओर जन समुदाय के साथ ट्रस्ट के सदस्य हरिराम पाटीदार, पंकज पाटीदार, राधेश्याम पाटीदार, रजनीकांत शुक्ला, श्रीकृष्ण कामधेनु गौशाला बनी के संस्थापक आचार्य डॉ देवेंद्र शास्त्री के प्रतिनिधित्व मंडल के प्रमुख पंडित अनिल त्रिवेदी, पंडित दशरथ व्यास की उपस्थिति में स्व. श्रीशंभुलाल प्रजापत के पुत्र प्रहलाद, दशरथ एव जगदीश प्रजापत ने गौसेवार्थ इक्यावन हजार रुपए गौशाला ट्रस्ट को भेंट किए। गौरतलब है कि ग्रान बनी में श्रीकृष्ण कामधेनु गोशाला में निराश्रित गोवंश की सेवा भावना को देखते हुए क्षेत्र के लोग लगातार सहयोग कर रहे है। गांव बरवेट के शंभूलाल प्रजापति का कुछ दिनों पूर्व निधन हो गया था। जिसके बारहवें पर उनके परिजनों ने 51 हजार रुपए नकद गोशाला ट्रस्ट को दान दिए है। इस अवसर पर अखिल भारतीय कुंभकार प्रजापति महासंघ के जिलाध्यक्ष जगदीश पटेल थांदला, भेरूलाल जाजपर, महेश गढ़वाल, कैलास प्रजापत, कुंदन प्रजापत, मोहन गढ़वाल सहित समाज जन उपस्थित थे।

60 वर्षीय बुजुर्ग की कुएं में डूबने से हुई मौत

माही की गूंज, काकनवानी। पुलिस थाना काकनवानी अंतर्गत ग्राम चोखवाड़ा में खीमा पिता सिस्का जाती वसुनिया उम्र 60 वर्ष की कुएं में गिरने से मौत हो गई। जिसकी तलाश परिजन कर रहे थे। परिजनों के तलाश करने पर लाश कुएं में तैरती हुई नजर आई जिस पर पुलिस को सूचना दी गई।

मतगणना कार्य के दौरान चिकित्सा सेवा में लापरवाही करने वाले दो चिकित्सक एवं दो वाहन चालक निलंबित

माही की गूंज, खरगोन।

लोकसभा चुनाव 2024 के दौरान 4 जून को मतगणना स्थल पीजी कॉलेज खरगोन में आकस्मिक चिकित्सा सेवा उपलब्ध कराने के लिए स्वास्थ्य विभाग के दो चिकित्सकों की प्रातः 5 बजे से मतगणना समाप्ति तक एम्बुलेंस सहित ड्यूटी लगाई गई थी। लेकिन मतगणना के दौरान आकस्मिक चिकित्सा सेवा उपलब्ध कराने में दोनों चिकित्सकों एवं वाहन चालकों के अनुपस्थित रहने के कारण कलेक्टर श्री कर्मवीर शर्मा ने उन्हें तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दिया है।

मतगणना स्थल पर आकस्मिक चिकित्सा सेवा उपलब्ध कराने के लिए शहरी प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र इंदिरा नगर खरगोन के चिकित्सा अधिकारी डॉक्टर सोहन रावत, जिला चिकित्सालय खरगोन के मेडिसिन विशेषज्ञ डॉक्टर मयंक पाटीदार, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र भगवानपुरा के वाहन चालक शांतिलाल पाटीदार एवं जिला चिकित्सालय के एंबुलेंस चालक महमूद पठान की ड्यूटी मतगणना स्थल पर लगाई गई थी।

मतगणना कार्य के दौरान एस.एफ. के हेड कांस्टेबल मुकेश पिता बाथु सिंह का स्वास्थ्य खराब होने पर उन्हें आकस्मिक चिकित्सा सेवा उपलब्ध कराने की आवश्यकता थी लेकिन उस समय ड्यूटी पर लगाए गए दोनों चिकित्सक एंबुलेंस सहित नदारत थे। जिससे हेड कांस्टेबल को उपचार के लिए अस्पताल पहुंचने में परेशानी का सामना करना पड़ा। कलेक्टर कर्मवीर शर्मा ने इस लापरवाही को गंभीरता से लेते हुए दोनों चिकित्सकों एवं वाहन चालकों को तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दिया है।

निलंबन अवधि में डॉ. सोहन रावत का मुख्यालय सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र वरुड़, डॉक्टर मयंक पाटीदार का मुख्यालय सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र भिकनगांव, वाहन चालक शांतिलाल पाटीदार का मुख्यालय जिला चिकित्सालय खरगोन एवं महमूद पठान का मुख्यालय सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र भगवानपुरा निर्धारित किया गया है।

पर्यावरण दिवस पर स्काउट गाइड ने ठाना सुरक्षित स्थान पर पौधा लगाना

माही की गूंज, बड़वानी।

जिला स्तरीय कार्यक्रम में छोटी-छोटी गाइड ने पौधा लगाकर पर्यावरण दिवस मनाया। भविष्य को सुरक्षित करने के लिए सभी ने प्रतिज्ञा की, हर बरसात में दो पौधे हम लगाएंगे और उनकी रक्षा भी करेंगे। गाइडर सुश्री तारेश्वरी भार्गव एवं श्रीमती शालिनी अवास्या, शिवराम बकावले जिला काउंसलर की देखरेख में पौधारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

छात्रावास और सुरक्षित स्थानो पर पौधा लगाने हेतु जिला संगठन आयुक्त गणेश श्रीवास्तव ने प्रत्येक छात्रावास में एक आम का पौधा लगाने हेतु गाइड स्काउट को प्रेरित किया। संभाग आयुक्त धीरज सोनी द्वारा पर्यावरण दिवस को हर स्काउट गाइड के द्वारा मनाने हेतु आव्हान किया। जिससे स्काउट गाइड को पर्यावरण के बारे में जागरूक रहना चाहिए। यूनिसेफ द्वारा पर्यावरण हेतु स्काउट गाइड से कार्य करने का आवाहन किया कि पन्नी थैली पॉलीथिन पर्यावरण की दुश्मन थी। पर्यावरण इनको उपयोग करने से इंकार करें घर से निकले थैला लेकर पॉलिथीन को इंकार करें ऐसे स्लोगन गाइड और स्काउट द्वारा लिखे गए अच्छे संदेश देकर जन जागरण हेतु जगह-जगह लोगों को इसके बारे में जागरूक किया पॉलिथीन हमारे भविष्य के लिए बहुत ही हानिकारक है इसका उपयोग ना करें आने वाली बरसात में हर व्यक्ति को एक पौधा लगाना है। ऐसे संदेशों से लिखे हुए स्लोगन बनाएं एवं पेंटिंग के द्वारा हरियाली का महत्व, पर्यावरण के लिए संदेश दिया। ग्लोबल वार्मिंग को अगर काम करना है तो आपको अधिक से अधिक पौधे लगाना है।

गर्मी से बचने का बस एक यही उपाय है, बाजार आने-जाने के लिए वाहन का उपयोग कम करें, अगर आपके घर से एक से दो किलोमीटर तक जाना है तो वाहन की जगह साइकिल का उपयोग करना चाहिये। पर्यावरण सुरक्षा के लिए एवं स्वास्थ्य के लिए है बहुत जरूरी है, ऐसा संदेश जिला कमिश्नर स्काउट शक्ति सिंह चौहान द्वारा दिया गया।

प्रवेश हेतु होगा टेलेंट सर्च का आयोजन

माही की गूंज, बड़वानी। शासकीय कन्या खेल परिसर निवाली में 15 जून को एवं शासकीय बालक खेल परिसर बड़वानी में 19 जून को टेलेंट सर्च प्रवेश चयन का आयोजन किया जायेगा। सहायक आयुक्त जनजातीय कार्य विभाग शक्तिसिंह चौहान से प्राप्त जानकारी अनुसार खेल परिसर बड़वानी एवं निवाली में छात्र-छात्राए अनुसूचित जनजाति वर्ग का होना आवश्यक है। जिले एंव क्षेत्र का कोई बंधन नहीं है। खेल परिसर में मिनी, जूनियर, सीनियर कक्षा 6टी से 12वी तक के जनजातीय सवंर्ग के छात्र-छात्राओं को ही नवीन प्रवेश दिया जायेगा, खेल परिसर में छात्र-छात्राओ का चयन निर्धारित बैटरी टेस्ट लेकर किया जायेगा, चयन परीक्षा में प्रवेश के समय मूल अंकसूची, जाति प्रमाण पत्र एवं आधार कार्ड की मूल प्रति, फोटोकापी प्रस्तुत करना अनिवार्य होगा, प्रवेशित छात्रों की निःशुल्क छात्रावास सुविधा, शिष्यवृत्ति, खेलकूद संबंधी उपकरण एवं खेल सामग्री, खेलकूद संबंधी साहित्य, खेलकूद कीट इत्यादि दिया जायेगा।

नाबालिग के साथ दुष्कर्म करने वाले आरोपी को 20 वर्ष की जेल

माही की गूंज, बड़वानी। विशेष न्यायालय (पाक्सो) बडवानी संध्या मनोज श्रीवास्तव ने पारित अपने फैसले मे नाबालिक पीड़िता के साथ दुष्कर्म करने के आरोप मे आरोपी राहुल पिता भूरेसिंह निवासी दाभड़ बैडीपुरा जिला बडवानी को धारा 5एल/6, 5 जे, (द्वितीय)/6 पाक्सो एक्ट, एवं धारा 376(3) भादवि में 20-20 वर्ष का कठोर कारावास एवं धारा 366 भादवि में 5 वर्ष का कारावास एवं कुल 2500 रूपये के अर्थदंड से दण्डित किया है। अभियोजन की ओर से पैरवी दुष्यंतसिंह रावत अतिरिक्त जिला अभियोजन अधिकारी बडवानी द्वारा की गई।

घटना 5 नवंबर 2022 को रात्री 10 बजे अभियोक्त्री शौच के लिये जाने का बोलकर गई थी जो काफी देर तक वापस नही आई। फरियादी ने अभियोक्त्री को आसपास, गांव व रिस्तेदोरी मे तलाश किया पर कोई पता नही चला। फरियादी को शंका थी कि कोई अज्ञात व्यक्ति अभियोक्त्री को बहला फुसलाकर भगाकर ले गया है। घटना की रिपोर्ट फरियादी एवं उसके रिश्तेदारों ने थाने पर दर्ज करवाई। अभियुक्त अभियोक्त्री को बहला फुलासकर गुजरात ले गया और उसके साथ दुष्कर्म किया था जिससे अभियोक्त्री गर्भवती हो गयी थी। पुलिस ने प्रकरण न्यायालय में प्रस्तुत किया।

विश्व पर्यावरण दिवस पर महाविद्यालयीन स्टॉफ ने किया पौधरोपण

माही की गूंज, बड़वानी।

प्राचार्य डॉ. वंदना भारती एवं प्रभारी, डॉ. जगदीश मुजाल्दे के मार्गदर्शन में शासकीय कन्या महाविद्यालय बड़वानी में विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर महाविद्यालय परिसर में पौधरोपण व श्रृमदान किया गया। प्राचार्य डॉ. वंदना भारती ने पर्यावरण दिवस के महत्व को समझाते हुये कहा कि, हम सभी को प्रकृति से प्रेम करना चाहिए एवं पौधे लगाने के साथ-साथ उनकी देखरेख भी करनी चाहिये। इस अवसर पर महाविद्यालय के डॉ. एन.एल. गुप्ता, डॉ. स्नेहलता मुझाल्दे, डॉ. दिनेश सोलंकी, डॉ. महेश कुमार निंगवाल प्रो. सीमा नाईक डॉ. रविन्द्र बरडे, डॉ. प्रियंका देवड़ा, डॉ. इन्दु डावर डॉ. विक्रमसिंह भिड़े, प्रो. शोभाराम वास्केल, डॉ. अंकिता पागनिस, श्रीमती रेखा बिसेन, अरशद खान, प्रो. प्रियका शाह कृष्णु यादव, संदीप दासौंधी सहित समस्त स्टॉफ उपस्थित थे।

भाजपा को स्पष्ट बहुमत नही मिलने से क्या फर्क पड़ता है...?

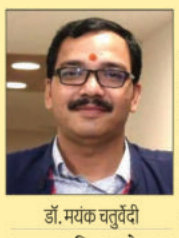

डॉ.मयंक चतुर्वेदी

लोकसभा चुनाव-2024 में जिस तरह का चुनावी परिणाम आया है, उसने अच्छे-अच्छे राजनीतिक विश्लेषकों को धूल चटा दी है, एनडीए नीत भाजपा की मोदी सरकार को 300 पार के सभी बड़े-बड़े दावे धरे रह गए और देश की जनता ने मजबूत विपक्ष देकर यह संदेश देने की कोशिश की है कि सहमति और विरोध का स्वर बराबर का हो, किंतु इसके साथ ही अनेक प्रश्न आज इस बार के चुनावों ने भारतीय राजनीति के लिए समीक्षा करने की दृष्टि से छोड़ दिए है।

देश में नया नैरेटिव यह है कि किसी को भी भारत की जनता लोकतंत्र में इतना मजबूत नहीं देखना चाहती कि वह अन्य को छोटा समझने की मानसिकता रखे या उनके बारे में थोड़ा भी कमजोर सोच पाए, लेकिन इसके साथ जो बड़ा प्रश्न आज खड़ा हो गया है, वह है कमजोर सत्ता क्या एक सबल राष्ट्र के निर्माण में अपनी प्रभावी भूमिका निभा सकती है?

यह आज सभी के सामने है कि कैसे जनता ने भाजपा को पूरी तरह अपने दम सत्ता बनाने से उसे रोक दिया है, किंतु यह सच पूरे भारत का फिर भी नहीं है। देश के कई राज्यों ने शत प्रतिशत भारतीय जनता पार्टी पर भरोसा जताया है। लोकसभा की 542 सीटों की काउंटिंग में दिल्ली, उत्तराखंड, हिमाचल, मध्य प्रदेश, अरुणाचल प्रदेश और त्रिपुरा में भाजपा ने क्लीन स्वीप किया है। देश की राजधानी से ह्रदय प्रदेश मध्य प्रदेश तक भाजपा पर भारत की जनता मोहित है, लेकिन वहीं, एक सच यह भी है कि इस बार का जनादेश बीजेपी से ज्यादा एनडीए के लिए है। बड़ी बात यह है कि दस सालों में पहली बार ऐसा हुआ है कि एनडीए का आंकड़ा 300 भी पार नहीं कर पाया और बीजेपी भी बहुमत के 272 के आंकड़े को नहीं छू पाई है, इसलिए उसे अपने सहयोगियों के सहारे देश का शासन चलाना होगा। अब प्रश्न यह है कि क्या ऐसे में देश बड़े निर्णय कर पाएगा?

सामान्य न्यूनतम कार्यक्रम (सीएमपी) अपनाकर भारत कितना तेजी से आगे विकास करेगा, यह अब देखना होगा। क्योंकि अब तक पिछले दस सालों में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की भाजपा सरकार सख्त फैसले लेने के लिए स्वतंत्र थी, किंतु इस बार ऐसा बिल्कुल भी नहीं है। पिछले 10 साल सबसे अधिक परिवर्तनकारी रहे हैं। अब तक भाजपा की मोदी सरकार एक ऐसी सरकार रही है जिसने दशकों पुरानी समस्याओं को हल करने में बड़ी कामयाबी हासिल की।

अनुच्छेद 370 को हटाने, सेना के लिए वन रैंक वन पेंशन, चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ के पद का सृजन, अयोध्या, काशी जैसे धार्मिक क्षेत्र निर्माण, राम मंदिर पुनर्प्रतिष्ठा, मजबूत अर्थव्यवस्था के लिए आर्थिक क्षेत्र में कई कड़े निर्णय, व्यवसाय के क्षेत्र में जीएसटी, इन्सॉल्वेन्सी एंड बैंकरप्सी कोड, नोटबंदी, काले धन के खिलाफ अभियान, क्रोनी कैपिटलिज्म, सरकारी ठेके में भ्रष्टाचार को खत्म करने विशेष कार्यक्रम, भारतीय उद्योग के लिए आत्मनिर्भर अभियान शुरू करना, नारी शक्ति वंदन कानून, अंतरिक्ष में भारत की ऊंची छलांग के लिए मजबूत कार्यक्रम, खेल सुविधाओं में बढ़ोतरी के लिए निर्णय, सहकारिता आंदोलन को समाज की अर्थव्यवस्था का प्रमुख हिस्सा बनाने के लिए सहकारिता मंत्रालय जैसे निर्णय मोदी सरकार के बड़े निर्णय रहे हैं।

इसी तरह से मैन्युफैक्चरर्स के लिए पीएलआई कार्यक्रम ने भारतीय उद्योग को प्रगति के पथ पर अग्रसर किया है। आधार

कार्यक्रम, डिरेक्ट बेनेफ़िट ट्रांसफ़र (डीबीटी कार्यक्रम) और व्यापक स्वास्थ्य बीमा कार्यक्रम हों या विदेशी मामलों से जुड़े निर्णय हरेक मोर्चे पर अब तक मोदी सरकार दृढ़ता से खड़ी नजर आई है। पाकिस्तान को आतंकवाद के मुद्दे पर बेनकाब करने से लेकर चीन की आक्रामता का वास्तविक नियंत्रण रेखा पर दिया गया भारत का जवाब, ऐसे अनेक कार्य हैं जिन्हें आज भाजपा की मोदी सरकार को लेकर सफलता के साथ गिनाया जा सकता है और इन्हीं का यह परिणाम भी है कि भारत दुनिया की वर्तमान में तीसरी आर्थिक शक्ति बनने जा रहा है। किंतु संदेह अब नया है और यह होना स्वभाविक भी है, क्योंकि अब तक तो भाजपा पिछले दो बार से अपने दम सत्ता के लिए आवश्यक नंबर लेकर आ रही थी, वह इस बार अपना स्वयं का बहुमत का आंकड़ा नहीं छू पाई है। जिसके चलते अब सामूहिक नेशनल डेमोक्रेटिक एलायंस (एनडीए) का नया साझा प्रोग्राम देश पर लागू होगा और इस राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन में कुल 41 दल शामिल हैं। विषय यह है कि क्या इन सभी के मन की बात को रखते हुए भाजपा मोदी-03 सरकार अपने स्तर पर स्वतंत्र निर्णय ले पाएगी?

भाजपा ने लोकसभा चुनाव 2024 के लिए जो अपना घोषणा पत्र जारी किया था, उसमें कई मुख्य बिन्दु हैं, जिन्हें पूरा करने का संकल्प भाजपा का है। जिसमें कि सरकार ने 70 साल की उम्र से ऊपर के किसी भी वर्ग के बुजुर्गों को आयुष्मान भारत योजना के तहत 5 लाख रुपये तक के मुफ्त इलाज, गरीबों के लिए 3 करोड़ घर, गरीबों को मुफ्त राशन 2029 तक देने की गारंटी तो है ही, साथ में एक राष्ट्र-एक चुनाव और समान नागरिक संहिता के प्रति भाजपा की प्रतिबद्धता को दोहराया गया है।

भाजपा के संकल्प पत्र में अन्य मुख्य बिन्दु देखें तो मुद्रा ऋण की सीमा 10 लाख से बढ़ाकर 20 लाख रुपये करना, सभी घरों में स्वच्छ पेयजल, गरीब परिवारों को मुफ्त बिजली, अधिकाधिक आईआईटी, आईआईएम, एम्स और अन्य ऐसे संस्थान खोलना, उत्तर, दक्षिण और पूर्वी भारत में बुलेट ट्रेन कॉरिडोर, मेट्रो नेटवर्क का विस्तार, पेपर लीक रोकने के लिए कानून, विद्यार्थियों के लिए स्वचालित स्थायी शैक्षणिक खाता रजिस्ट्री (एपीएएआर) 'एक राष्ट्र, एक छात्र आईडी' को लागू करना, कामकाजी महिलाओं के लिए छात्रावासों में वृद्धि, तीर्थ यात्रा योजना, उच्च शिक्षा संस्थानों में इन्क्यूबेशन केन्द्रों की स्थापना, सब्जी उत्पादन एवं भंडारण के लिए नए क्लस्टर, भारत को उच्च मूल्य सेवा केन्द्र बनाने के लिए, नए वैश्विक पूंजी केन्द्र, वैश्विक प्रौद्योगिकी केन्द्र और वैश्विक इंजीनियरिंग केन्द्र की स्थापना, भारत के प्रथम मानव अंतरिक्ष उड़ान मिशन, गगनयान को प्रक्षेपित करना तथा चंद्रमा पर एक अंतरिक्ष यात्री को उतारना, भगवान राम की विरासत को बढ़ावा देने के लिए एक वैश्विक आउटरीच कार्यक्रम शुरू करने जैसे अनेक संकल्प रखे गए।

वस्तुतः भाजपा अपने तीसरे कार्यकाल के जरिए सेवा, सुशासन और गरीब कल्याण की गारंटी दे रही है। 2036 में ओलंपिक की मेजबानी भारत करे, इसके लिए तैयारियां होनी हैं। इंफ्रास्ट्रक्चर, इन्वेस्टमेंट, मैन्युफैक्चरिंग, हाई वैल्यू सर्विसेज, स्टार्टअप और टूरिज्म और खेल के जरिये लाखों रोजगार देश में पैदा हों, इस पर काम होना है। नारी तू नारायणी के तहत आगे तीन करोड़ लखपति दीदी बनाने की भाजपा की योजना है। इसी प्रकार से अन्य कई योजनाओं पर काम करने का संकल्प भाजपा ने अपने तीसरे कार्यकाल के लिए ले रखे हैं, वास्तव में अब देखना यह होगा कि ताजा राजनीतिक हालातों में भाजपा की केंद्र सरकार क्या अपने लिए इन संकल्पों को सहजता के साथ पूरा कर पाएगी?

पटेल परिवार ने हज यात्रियों का स्वागत कर की मंगलमय यात्रा की कामना

माही की गूंज, अलीराजपुर।

स्थानीय पटेल परिवार बोरखड़ के वरिष्ठ एवं कांग्रेसी नेता महेश पटेल, पूर्व विधायक मुकेश पटेल, जोबट विधायक सेना पटेल, बापू पटेल, दिलीप पटेल द्वारा पवित्र हज यात्रा पर जा रहे जिले के मुस्लिम समाज के हाजियो का स्वागत समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर जिले के समस्त हज यात्री ओर मुस्लिम समाज के वरिष्ठजन मौजूद थे।

स्वागत समारोह मे जिले से आए समस्त हाजियो का पटेल परिवार द्वारा पुष्प माला पहनाकर मिठाई खिलाकर स्वागत किया गया। समारोह को सम्बोधित करते हुवे महेश पटेल ने हज यात्रा पर जा रहे हाजीयों को मुबारक बाद देते हुवे कहा की आप लोग पवित्र तीर्थ स्थल पर जाकर देश-प्रदेश ओर जिले की खुशहाली, तरक्की ओर भाईचारे की विशेष रूप से दुआएं करे।

विधायक सेना पटेल एवं पूर्व विधायक मुकेश पटेल ने कहा कि, आप लोग भाग्यशाली हो की आपको पवित्र तीर्थ हज का मौका मिला है, हम आपकी हज यात्रा की मंगलमय कामना करते है। उन्होंने हाजियो से देश मे अमन-चेन की प्रार्थना की। समारोह को सेय्यद मम्मा मियाँ ओर सेय्यद हनीफ मियाँ ने पटेल परिवार द्वारा किए इस आयोजन की सरहाना करते हुवे धन्यवाद दिया। इस दौरान सहभोज का भी आयोजन किया गया।

इस अवसर पर शहर काजी सेय्यद अफजल मियाँ, जिला कांग्रेस अध्यक्ष ओमप्रकाश राठौर, नपा उपाध्यक्ष साबिर बाबा, जिला कांग्रेस उपाध्यक्ष सानी मकरानी, बारीक़ कुरैशी, अजहर चंदेरी, हाजी आरिफ़ बलोच, जुनेद कुरैशी, हाजी सिराज पठान, नसरु मुग़ल, अख़लाक़ नवाबी, अमान पठान, सुल्तान खत्री, मोनू बाबा, भीमसिंह राठौड़, राजेंद्र राठौर गुड्डू, राहुल परिहार, रफीक चौधरी, रफीक बादशाह, ईरफ़ान मंसूरी सहित जिले के समस्त हज यात्री ओर मुस्लिम समाजजन मौजूद थे।

भाजपा लोकसभा प्रत्याशी श्रीमती चौहान की जीत पर मनाया जश्न

माही की गूंज, आम्बुआ।

लोकसभा चुनाव की मतगणना पूर्ण होने पर झाबुआ-रतलाम लोकसभा सीट एक बार पुनः भाजपा की झोली में आ गई है। अलीराजपुर जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती अनीता नागरसिंह चौहान जिन पर भाजपा ने विश्वास जताया वे प्रथम बार में ही लोकसभा चुनाव 2 लाख 7 हजार 232 रिकार्ड मतों से जीत गई।

गूंज संवाददाता को भाजपा आम्बुआ मंडल अध्यक्ष भरत महेश्वरी तथा जिला युवा मोर्चा अध्यक्ष विकास माहेश्वरी ने बताया कि, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की गारंटी तथा राज्य शासन के विगत वर्षों के कार्यों एवं प्रदेश वन मंत्री नागरसिंह चौहान, जिला भाजपा अध्यक्ष मक्कू परवाल लोकसभा प्रभारी किशोर शाह एवं वरिष्ठ पार्टी कार्यकर्ताओं युवा कार्यकर्ताओं की मेहनत का नतीजा है कि, इस लोकसभा सीट पर ऐतिहासिक जीत हासिल हुई। जीत पर आम्बुआ में जमकर आतिशबाजी की गई जुलूस निकाला जाकर मिठाई बांटी गई क्षेत्र में हर्ष का माहौल है।

नरेन्द्र मोदी की राम-राम घरों तक पहुंची, लोकल कनेक्ट से भाजपा जीती

माही की गूंज, धार।

धार-महू लोकसभा के साथ रतलाम-झाबुआ और खरगोन-बड़वानी लोकसभा सीटों में जीत के लिए कांग्रेस और भाजपा ने पूरी ताकत झोंकी। भीषण गर्मी ने पसीना बहाया। इसमें प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का राष्ट्रीय और लोकल कनेक्ट का जादू चल गया। सात मई को भीषण गर्मी में प्रधानमंत्री ने खरगोन और धार में सभा कर चार संसदीय क्षेत्र पर फोकस किया।

धार में तो उन्होंने भोजशाला और मांडू का जिक्र कर स्थानीय कनेक्ट ऐसा बनाया कि 13 मई तक मोदी की राम-राम घर-घर तक पहुंच गई। खरगोन में आदिवासी मतदाताओं से-वारलूं छे और मां नर्मदा के माध्यम से जुड़े थे, वहीं कांग्रेस के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष राहुल गांधी की आदिवासी और आरक्षण की बात असरकारी नहीं रही।

छह माह पहले मालवा-निमाड़ में विधानसभा चुनाव के प्रदर्शन से भाजपा के प्रदेश और राष्ट्रीय नेतृत्व को चिंता थी, इसलिए प्रधानमंत्री फरवरी में जब इलेक्शन मोड में आए तो उन्होंने सबसे पहले आदिवासी वोटरों को साधने के लिए झाबुआ में अपनी सभा की। हालांकि तब चुनावी कार्यक्रम घोषित नहीं हुआ था। मोदी ने इस जीत की आधारशिला रख दी थी। उसके बाद राहुल गांधी ने भी अपने वोट बैंक को बनाए रखने के लिए धार जिले के बदनावर व रतलाम में भारत जोड़ो अभियान के तहत बड़ी सभा की।

यहां पर अपने सभी कांग्रेसी विधायकों को एक जाजम पर बैठाया और जीत के लिए मंत्र भी दिया। इस तरह से दोनों ही राजनीतिक दल मालवा-निमाड़ के इन लोकसभा क्षेत्रों में चुनाव कार्यक्रम के पहले ही कमर कस चुके थे। आचार संहिता लागू हुई और चुनावी सरगर्मी में दोनों पार्टी को फिर इस क्षेत्र की याद आई। प्रधानमंत्री वैसे तो अप्रैल में ही धार आने वाले थे।

रोज-रोज के विवादों से तंग आकर पति ने की पत्नी की हत्या, बाद में काटी अपने हाथ की नस दोनो की मौत

माही की गूंज, बड़नगर।

आज सुबह साढ़े 7 से 8 बजे के बीच कवि प्रदीप उद्यान के सामने अमित पिता गोपाल आचार्य (30) ने अपने घर पर पत्नी शिखा राठौर (28) की गला दबाकर हत्या कर खुद ने अपने हाथ की नस काट ली। प्राप्त जानकारी के अनुसार अमित आचार्य ने 8 वर्ष पूर्व शिखा राठौर से लव मैरिज की थी। उसके बाद से ही दोनों में छोटी-छोटी बातों पर विवाद होने लगे थे इन दोनों का समझौता न्यायालय से भी हुआ था उसका शपथ पत्र बड़नगर थाने पर भी जमा है। घटना की जानकारी 7 वर्ष के बालक जब सुबह अपने मम्मी-पापा के रूम में गया वहा पर दोनो को अचेत देखा तो उसने अपनी दादी को बताया उसके बाद पुलिस को जानकारी दी गई।

अमित कुछ महीनो से फाइनेंस की कंपनी में कार्य करता था तो वही उसकी पत्नी शिखा राठौर जैन पब्लिक स्कूल में पढ़ने का कार्य करती थी।

पुलिस द्वारा अमित का एक सुसाइड नोट भी प्राप्त हुआ है जिसमें अमित ने लिखा है कि, मैं शिखा से परेशान हो गया था। इसने मेरी और मेरे परिवार का जीना हराम कर दिया है, मैंने इसकी शिकायत पुलिस थाने पर भी की थी,किंतु वहां से भी मुझे न्याय नहीं मिला है। मुझे परेशान करने में शिखा के माता-पिता ने भी कोई कसर नहीं छोड़ी है।

वही शुरुआती जांच में बड़नगर थाना प्रभारी अशोक पाटीदार ने बताया, अमित को एक बालक और एक बालिका हैं लड़का लवित 7 वर्ष और मैत्री 2 वर्ष की है। पिछले दो माह से अधिक समय से अमित अपनी मां मंजू राठौर के साथ दोनों बच्चों को लेकर झाबुआ में रह रहा था। बड़नगर में शिखा अकेली थी। घटना के दो-तीन दिन पूर्व ही ये बड़नगर आए हुए थे।

पूरे परिवार के साथ रेलवे कर्मचारी ने किया सुसाइड

जबलपुर।

मध्य प्रदेश के जबलपुर में एक बड़ी घटना हुई है। यहां एक रेलवे कर्मचारी ने अपने पूरे परिवार के साथ ट्रेन के सामने कूदकर आत्महत्या कर ली है। रेलवे में तैनात इस कर्मचारी ने अपनी पत्नी और दो बेटियों के साथ सुसाइड किया है। इस घटना में सभी की मौत हो गई है। बताया जा रहा है कि कपल की बड़ी बेटी की उम्र छह साल और छोटी बेटी की उम्र महज 3 माह थी। मृतक ग्रुप डी कर्मचारी थी। घटना के बाद मौके पर पहुंची भेड़ाघाट पुलिस और रेलवे पुलिस ने इसकी जांच-पड़ताल शुरू कर दी है।

घटना जबलपुर के भेड़ाघाट थाने क्षेत्र की है। आत्महत्या करने का फिलहाल कोई कारण सामने नहीं आया है। पुलिस मामले में जांच-पड़ताल कर रही है मृतकों के शव को पोस्टमार्टम के लिए जिला अस्पताल पहुंचाया गया है। पुलिस परिवारजनों से पूछताछ कर रही है। पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार सिलोदा गांव का रेलवे कर्मचारी ने उसकी पत्नी और दो बच्चों के साथ सुसाइड किया है। पति का नाम नारायण है और उसकी उम्र 35 वर्ष है साथ ही पत्नी लीना ओर 2 बच्चे है जिसकी उम्र 6 साल ओर 1 साल है।

बताया जा रहा है कि पारिवारिक विवाद के चलते रेलकर्मी ने यह कदम उठाया है। जीआरपी और भेड़ाघाट थाने की पुलिस मामले की जांच कर रही है। बड़े पिता जवाहरलाल चढ़ार के मुताबिक कभी बेटे-बहू में लड़ाई-झगड़े जैसी कोई बात नहीं सुनी। समझ नहीं आ रहा कि उन्होंने ऐसा कदम क्यों उठाया है, अभी 3 जून को ही गांव आरछा आया था। हमारी बातचीत हुई, दिनभर रहा, शाम को जबलपुर लौटा था।

सोनाली दुबे एडिशनल एसपी जबलपुर ने बताया कि, घटना भेड़ाघाट रेलवे स्टेशन से नजदीक की है। चारों के शव कटे हुए मिले थे। घटनास्थल से थोड़ी दूर बाइक भी मिली है। रेलकर्मी सिहोदा गांव में रहते थे। साथी कर्मचारी रेलवे ट्रैकमेन राजेंद्र मरावी ने बताया नरेंद्र सभी से हंसकर बात करते थे। खुशहाल व्यक्तित्व था। साफ और सुलझे हुए थे। उनके चेहरे पर कभी परेशानी और शिकन नहीं देखी। जीआरपी और भेड़ाघाट थाने की पुलिस मामले की जांच कर रही है। पुलिस के मुताबिक, घटना भेड़ाघाट रेलवे स्टेशन से नजदीक की है। घटनास्थल से थोड़ी दूर बाइक भी मिली है।

अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक सोनाली दुबे के अनुसार सुसाइड करने वाला परिवार अल सुबह 4 बजकर 30 मिनिट के करीब निकला था। पुलिस को सूचना लगी थी कि एक परिवार के पति पत्नी और दो बच्चे रेलवे ट्रैक पर कट कर मृत हो गए हैं सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची और जांच पड़ताल में जुटी। पुलिस मामले में तहकीकात कर रही है।

चरित्र शंका से परेशान महिला ने पति की कर दी हत्या

माही की गूंज, धार। पुलिस अधीक्षक मनोज कुमार सिंह के मार्गदर्शन में गंधवानी पुलिस द्वारा अंधे कत्ल का खुलासा किया गया। इसमें हत्या की सूचना देने वाली पत्नी ही आरोपित निकली है। पति चरित्र शंका करते हुए गलत व्यवहार करता था। 26 मई को भी अनुचित व्यवहार किया तो पत्नी ने उसे लोहे की राड से मारकर मौत के घाट उतार दिया। पुलिस की जांच में इस बात का खुलासा हुआ। इस तरह से मृतक की पत्नी ही हत्या की आरोपित निकली।

महिला ने 26 मई को थाना गंधवानी में रिपोर्ट दर्ज कराई थी कि उसका पति भारत निंगवाल निवासी वीरपुर घर से 500 रुपये लेकर सिगरेट लेने गया था जो रात को घर नहीं आया। सुबह पति भारत की लाश घर के पास उल्टे मुंह पड़ी हुई मिली। महिला की रिपोर्ट पर से पुलिस ने हत्या का प्रकरण दर्ज जांच शुरू की। अनुसंधान के दौरान पाया गया कि भारत निंगवाल पत्नी को चरित्र शंका कर मारपीट करता था। 26 मई रात्रि में कपड़े निकालने के लिए जबरदस्ती करने से तंग आकर पत्नी ने लोहे की राड से सिर, पेट व गले में चोट पहुंचाकर हत्या कर दी। पत्नी यह स्वीकार भी कर लिया। थाना गंधवानी पुलिस द्वारा प्रकरण में महिला को गिरफ्तार कर घटना में लोहे की राड जब्त कर ली गई है।

अस्पताल भवन प्रारम्भ करने हेतु हुई समीक्षा बैठक

माही की गूंज, बड़नगर।

बड़नगर के शासकीय चिकित्सालय सिविल हॉस्पिटल के सभा कक्ष में रोगी कल्याण समिति की साधारण सभा पदेन अध्यक्ष एवं विधायक जितेन्द्र उदयसिंह पण्ड्या की अध्यक्षता में बैठक रखी गई। समिति द्वारा अस्पताल प्रशासन के विभिन्य प्रस्तावों पर अमल करने का निर्देश दिया। 150 बिस्तरीय नवीन अस्पताल भवन कजलाना का प्रारम्भ करने हेतु समीक्षा बैठक के आयोजन हेतु मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी जिला उज्जैन एवं अन्य संबंधित विभागो/जनप्रतिनिधिओं बुलाने हेतु निर्देशित किया गया। बैठक में वर्तमान में संचालित अस्पताल भवन का उपयोग नर्सिंग कॉलेज हेतु प्रस्ताव बनाने के लिए निर्देशित किया गया। साथ ही ऑक्सीजन प्लान्ट सिफ्टिंग एवं सुधार हेतु, सायकल स्टैण्ड हेतु नवीन निविदा निकालने हेतु, संस्था के समस्त चिकित्सकों एवं स्टॉफ को समय पर रोस्टर अनुसार ड्युटी करने हेतु निर्देश दिये।

इस अवसर पर मनोद यादव, जयेश आचार्य, अंकित पाटोदी, नवीन राठोड़, मांगीलाल बारोड़, जितेन्द्र यादव साथ ही शासकीय सेवक बालकृष्ण भावसार, दिनेशचन्द्र डोडिया, रविराज यादव, दिनश पंचौली, सौरभ उपाध्याय व सभी शासकीय सेवक उपस्थित रहे। संचालन कन्हैयालाल वर्फा द्वारा किया गया एवं आभार डॉ. सुयश श्रीवास्तव द्वारा माना गया।

क्षेत्र में बच्चों की पढ़ाई को लेकर लापरवाही करने वाले शिक्षकों पर होगी कड़ी कार्रवाई

माही की गूंज, बड़नगर। विजय सोलंकी

गर्मी की छुट्टी खत्म होते ही बड़नगर नवागत शिक्षा अधिकारी बिईओ अश्विनी बनडोड ने बच्चों की पढ़ाई को लेकर सख्त निर्देश दिए। स्कूल का नया सत्र खुल चुका है सभी शिक्षक समय सारणी के अनुसार स्कूल पहुंचे बच्चों की पढ़ाई को लेकर लापरवाही न बरतें अन्यथा कड़ी कार्रवाई होगी। इस बात का सभी शिक्षक विशेष ध्यान दें।

बड़नगर नवागत शिक्षा अधिकारी बिईओ अश्विनी बनडोड ने मीडिया के सामने जानकारी देते बताया कि, बच्चों की शिक्षा के प्रति बड़नगर क्षेत्र में मेरी पहली प्राथमिकता रहेगी के बच्चों को पढ़ने वाले शिक्षक बिल्कुल फ्री माइंड डिप्रेशन से बाहर होकर इंजॉय के साथ बच्चों को पढ़ाई करवाएं ताकि कोई भी बच्चा पढ़ाई को बोझ न समझें। बड़नगर क्षेत्र के सभी बच्चे अच्छे नंबर से उत्तीर्ण हो सके बच्चों स्कूल में बच्चों की उपस्थिति 100 प्रतिशत रहे इसकी जवाबदारी शिक्षक की रहेगी। माता-पिता से मेरा नर्म निवेदन है कि, प्रतिदिन बच्चों को स्कूल भेजें एव शाम के समय विद्यालय में हुई गतिविधियों के बारे में चर्चा करें ताकि बच्चों को विद्यालय में संबंधित रोचक चीजें या उनकी परेशानी साझा करने में हिचकिचाहट न रहे कीजिए। अगर प्राइवेट स्कूलों में किसी भी बच्चों को फीस को लेकर या किसी अन्य बात को लेकर टॉर्चर किया जाता है और हमें शिकायत प्राप्त होगी तो हम कड़ी कार्रवाई करेंगे। प्राइवेट स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चों के पालक कहीं से भी बच्चों की किताबें एव गणवेश ले सकते हैं। अगर प्राइवेट स्कूल के संचालक किसी भी बालकों को अगर परेशान करते हैं तो उनके खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी।

बड़नगर नवजात शिक्षा अधिकारी अश्विनी बनडोड की बात करें तो इन्होंने कक्षा 1 से लेकर 12वीं तक की शिक्षा शासकीय उच्च विद्यालय बड़वानी से की और इंदौर में 2018 में इनका एसजीएसआईआईएस क्वालिफिकेशन कंप्लीट किया 2020 में एमपीपीएससी की परीक्षा उत्तीर्ण कर सहायक संचालन स्कूल शिक्षा विभाग के पद पर चयनित हुई है। वर्तमान में बिईओ के पद पर बड़नगर में पदस्य हुई है इन्होंने एमपीपीएससी की परीक्षा की तैयारी कोरोना कल में अपने गृह जिले बड़वानी में की।

अनीता बनी भाजपा की पहली महिला सांसद

माही की गूंज, झाबुआ।

लोकसभा चुनाव 2024 की घोषणा के पहले ही भाजपा ने सभी को चोकाते हुए सांसद का टिकट काटकर अलीराजपुर जिले की जिला पंचायत अध्यक्ष अनिता नागर सिंह चौहान को टिकट दिया। वहीं कांग्रेस ने लंबे चिंतन के पश्चात वरिष्ठ नेता कांतिलाल भूरिया को टिकट दिया। तब हर क्षेत्र में यह चर्चा थी कि, क्या अनीता चौहान, कांतिलाल भूरिया को टक्कर दे पाएगी? लेकिन अपनी सरल छवि व नरेंद्र मोदी के नाम पर अनीता ने नया इतिहास रच कर अब तक की सबसे बड़ी जीत दर्ज करते हुए संसदीय सीट पर भाजपा की पहली महिला सांसद होने का गौरव प्राप्त किया। तथा 1962 में जमुना देवी के बाद दूसरी महिला सांसद बनी।

क्यों जीती अनीता...

प्रत्याशी की घोषणा, चुनाव की घोषणा के पूर्व ही हो चुकी थी और नाम घोषित होते ही प्रचार करना प्रारंभ कर दिया। मंडल स्तर तक पहुंचकर पुराने कार्यकर्ताओं को सक्रिय किया, छोटी-मोटी नाराजगी को दूर किया, सबसे बड़ी बात पूरे प्रचार में केवल और केवल मोदी के नाम पर वोट मांगे। प्रदेश में भाजपा सरकार होने का भी लाभ मिला। सरल और सहज छवि और शालीनता से केवल मोदी के लिए वोट मांगे। विरोधी उम्मीदवार पर व्यक्तिगत हमले नहीं किए, केवल और केवल कमल के निशान के लिए मत याचना की। जब तक कांग्रेस का उम्मीदवार घोषित होना था, तब तक अनिता प्रचार का एक राउंड पूरा कर चुकी थी। पति नागर सिंह चौहान का मंत्री होना भी अनीता के लिए प्लस पॉइंट रहा। आदिवासी अंचल की बेटी व बहू बनकर छोटे-बड़े से आशीर्वाद मांगा और लोगों के दिल में जगह बनाई। बड़ी संख्या में कांग्रेस के छोटे-बड़े नेता और कार्यकरता भाजपा में शामिल हुए जिससे भाजपा को मनोवैज्ञानिक बढ़त मिली और चुनाव में ऐतिहासिक जीत दर्ज की। बूथ मैनेजमेंट मजबूत रहा, कार्यकर्ताओं ने तन-मन से कार्य किया।

क्यों हारे कांतिलाल भूरिया..?

कांग्रेस का बड़ा चेहरा लेकिन टिकट प्राप्त करने के लिए संघर्ष करना पड़ा, जिससे कार्यकर्ता में गलत संदेश गया। बड़े नेता की छवि से बाहर नहीं निकल पाए, पुराने संबंधों के भरोसे बैठे रहे, नए संबंधों को पूर्ण जीवित नहीं किया। बड़ी संख्या में पुराने सहयोगियों ने साथ छोड़ दिया, चुनाव प्रचार में कार्यकर्ताओं का अपेक्षित सहयोग नहीं मिला। विधायक पुत्र का विरोधियों पर व्यक्तिगत हमला जनता को रास नहीं आया साथ ही चुनाव प्रचार में वरिष्ठ नेताओं का भी अपेक्षित सहयोग नहीं मिल पाया। जिसकी वजह से संसदीय इतिहास की सबसे बड़ी हार का सामना करना पड़ा। पुत्र विक्रांत भूरिया ने पूरे प्रचार की बागडोर अपने हाथ में रखी, वरिष्ठ नेताओं की जिम्मेदारी तय नहीं की। साथ ही समय-समय पर भाजपा प्रत्याशी अनीता चौहान के पति वन मंत्री नागर सिंह चौहान व उनके परिवार के सदस्यो पर व्यक्तिगत आरोप लगाए तथा उनके खिलाफ अभद्र भाषा का प्रयोग किया जिसे आम जनता ने पसंद नही किया।

आठ में से सात विधानसभा में बढ़त

चुनाव परिणाम के पहले तमाम सर्वे रतलाम सीट पर करीबी मुकाबला बता रहे थे। खुद कांग्रेस आशंकित थी कि, उसे मध्यप्रदेश में 5 से 6 सीट मिल सकती है, जिसमे रतलाम सीट भी शामिल थी। लेकिन परिणाम, तमाम क्यासो और अटकलों के विपरीत निकला। केवल सैलाना विधानसभा से कांग्रेस लीड ले पाई। वहीं भाजपा ने अलीराजपुर, रतलाम शहर और रतलाम के ग्रामीण से बड़ी लीड ली। जोबट, थांदला, पेटलावद, झाबुआ विधानसभा में भी सम्मानजनक लीड के साथ पूरे संसदीय क्षेत्र में अपने जीत का आंकड़ा 2 लाख के पार कर लिया। कांग्रेस को झाबुआ विधानसभा के साथ ही पेटलावद और थांदला में बड़ी उम्मीदें थी लेकिन आम मतदाताओं पर कांतिलाल भूरिया की भावनात्मक अपिल (आखरी चुनाव) का भी प्रभाव नहीं पड़ा। इस हार के साथ ही कांतिलाल भूरिया के लंबे राजनीतिक जीवन पर भी विराम लग सकता है। आगे पार्टी कोई मौका देगी इसकी संभावना कम ही है, लेकिन राजनीति में असंभव कुछ भी नहीं है। वही अब अलीराजपुर, जिला संसदीय क्षेत्र का नया राजनैतिक केंद्र बिंदु बनेगा। नागर सिंह चौहान का प्रदेश की राजनीति में दखल बढ़ेगा, अलीराजपुर जिले का नाम राष्ट्रीय राजनीति में भी चमकेगा।

जनता ने रख दी अपनी राय, संसदीय क्षेत्र के साथ मध्यप्रदेश से कांग्रेस का सुपड़ा साफ

माही की गूंज, झाबुआ।
मुजम्मिल मंसुरी

लोकसभा चुनाव के लंबे और तनाव पूर्ण माहौल से 4 जून को सभी को राहत मिल गई। किसी ने जीत का जश्न मनाया तो किसी के पल्ले हार आ गई। रतलाम - झाबुआ संसदीय सीट की जनता ने इस बार कई इतिहास बनाए। एक इतिहास तो यह की 1962 के बाद 64 वर्षों के लंबे अंतराल के बाद इस संसदीय सीट को दूसरी महिला सांसद मिली। हालांकि इस अंतराल में कई बार महिला प्रत्याशियों ने अपना भाग्य आजमाया लेकिन सफलता नहीं मिली। दूसरा इतिहास यह कि, भाजपा ने इस सीट पर रिकार्ड मतों से जीत दर्ज की। तीसरा इतिहास यह कि, रतलाम-झाबुआ संसदीय सीट अब कांग्रेस की परंपरागत सीट नहीं रही। चौथा इतिहास यह कि, यहां कांग्रेस की हार ने पिछले सारे रिकार्ड तोड़ दिए। इससे पहले इस संसदीय सीट पर कोई भी प्रत्याशी कांग्रेस या भाजपा का इस अंतराल से ना तो जीता था और ना ही हारा था।

रतलाम-झाबुआ संसदीय सीट पर भाजपा की अनीता नागरसिंह चौहान ने पहली बार सांसद का चुनाव लड़ते हुए एक नया रिकार्ड स्थापित कर दिया है। 4 जून को आए लोकसभा चुनावों के परिणामों ने सब को चौका के रख दिया है। भाजपा की अनीता नागरसिंह चौहान ने इस लोकसभा चुनाव में पहली ही बार में रिकार्ड 2 लाख 7 हजार 232 मतों से विजयश्री हासिल की। अनीता नागरसिंह चौहान की इस जीत ने लोकसभा क्षेत्र के सारे विश्लेषणों को फेल कर के रख दिया। इस लोकसभा सीट पर विशेषज्ञों के किए गए सारे विश्लेषण धरे के धरे रह गए।

4 जून को मतगणना के पहले चरण से ही भाजपा यहां आगे दिखाई दी और यह क्रम लगातार चलता रहा। यहां कांग्रेस एक भी राउंड की मतगणना में आगे नहीं दिखाई दी। दिन ढलते-ढलते भाजपा की यह बढ़त इतनी बढ़ गई कि इसने एक रिकार्ड का रूप ले लिया और 2 लाख से अधिक वोटों से भाजपा की अनीता चौहान ने इस लोकसभा सीट पर अपनी जीत दर्ज कर ली। यहां एक रिकार्ड जीत का किर्तिमान बना तो वहीं दूसरी और पहली बार कांग्रेस की इस लोकसभा सीट से करारी हार का किर्तिमान भी स्वतः ही बन गया। वैसे रतलाम-झाबुआ सीट पहले कांग्रेस की परंपरागत सीट मानी जाती थी लेकिन अब यह मिथक भी कांग्रेस की इस हार के बाद बदलता दिखाई दे रहा है। जनता ने अपनी राय रख दी है। यह तीसरा मौका है जब रतलाम-झाबुआ संसदीय सीट भाजपा के कब्जे में चली गई है। हालांकि देखा जाए तो पूरे प्रदेश में इस बार कांग्रेस का सूपड़ा साफ हो गया है। लोकसभा चुनावों के तमाम आंकलनों में यह माना जा रहा था कि, प्रदेश की चाहे जो स्थिति रहे लेकिन रतमाल-झाबुआ संसदीय सीट पर मुकाबला कड़ा होगा। मगर परिणाम सामने आने के बाद स्थिति इसके ठीक उलट देखने को मिली है। इस संसदीय सीट पर जैसे कांग्रेस कहीं मुकाबले में नजर ही नहीं आई हो। जबकि महज छः माह पूर्व हुए विधानसभा चुनावों को अगर देखें तो इस संसदीय क्षेत्र की आठ विधानसभाओं में से तीन कांग्रेस के खाते में थी। मगर इन तीनों विधानसभाओं से भी इस लोकसभा चुनाव में कांग्रेस को कोई फायदा होता नजर नहीं आया अपितु बड़ा नुकसान ही सामने देखने को मिल रहा है।

हालांकि अनीता चौहान की यह जीत उनकी अपनी जीत तो नहीं कही जा सकती। यह माना जा रहा है कि, इस बार मध्यप्रदेश में मोदी फैक्टर चला है और इसी का परिणाम है कि, प्रदेश की सभी 29 सीटों पर भाजपा ने विजयी पताका लहराया है। कांग्रेस प्रदेश में एक भी सीट लाने में कामयाब नहीं हुई है। इस लोकसभा चुनावों से एक बार फिर यह साबित होता दिखाई दे रहा है कि, भाजपा का प्रदेश और केंद्रीय नेतृत्व कांग्रेस के मुकाबले कई गुना अधिक मजबूत है। केंद्रीय संगठन, प्रदेश संगठन, तीन प्रदेश मंत्री और प्रदेश में भाजपा की सरकार होना भी इस लोकसभा सीट पर भाजपा की जीत का कारण रहा है। कुशल नेतृत्व और बूथ स्तर तक की संगठित रणनीति ने मध्यप्रदेश में भाजपा को सिरमोर बनाया है।

रतलाम-झाबुआ लोकसभा सीट पर भाजपा ने लोकसभा चुनावों की अधिकारिक घोषणा के पहले से ही तैयारियां शुरू कर दी थी। चुनावी तारीखों के पहले ही भाजपा अपनी प्रत्याशी अनीता नागरसिंह चौहान को लेकर मैदान में उतर चुकी थी। जबकि कांग्रेसी खेमें से प्रत्याशी के नाम की घोषणा में काफी लेट लतीफी देखी गई। कांग्रेस की तरफ से प्रत्याशी का नाम घोषित होने के पहले चुनाव को लेकर किसी तरह की कोई हलचल देखने को नहीं मिली थी। कांतिलाल भूरिया का नाम घोषित होन के बाद भी कांग्रेस जमीन पर नहीं दिखाई दी। कांग्रेस का अधिकतर प्रचार सोशल मीडिया पर दिखाई दिया तो जमीनी हकीकत से कांग्रेसी कोसो दूर भी दिखाई दी।

हालांकि इस लोकसभा चुनाव में जो चौकाने वाली बात सामने आई वह मतों के अंतराल की है। जीत-हार के इस अंतराल ने सभी को चौका कर रख दिया है। चुनावी परिणाम आने से पहले यह किसी ने भी कल्पना नहीं की थी कि हार-जीत का यह अंतर इतना अधिक होगा। सभी के कयास रतलाम-झाबुआ संसदीय सीट पर कांटे की टक्कर के थे। मगर 4 जून को आए परिणामों ने सभी को चौका कर रख दिया।

बहरहाल चुनावी रण समाप्त हो चुका है और रतलाम-झाबुआ संसदीय सीट को अपना नया सांसद अनीता नागरसिंह चौहान के रूप में मिल चुका है। अब वे दिल्ली जाकर क्षेत्र की जनता का प्रतिनिधित्व करेंगी। आगे की स्थितियां जो भी हो लेकिन अगले पांच साल तक तो इस संसदीय सीट पर भाजपा ने अपने झंडे गाढ़ दिए है। इस करारी हार पर मंथल करने के लिए कांग्रेस के पास अब पांच साल का समय है।

जीत के बाद अनीता नागरसिंह चौहान ने जनता के विश्वास पर खरा उतरने और विकास में कोई कसर नही छोड़ने की बात कही है, तो वहीं कांग्रेस के कांतिलाल भूरिया ने जनादेश को स्वीकारते हुए हार के कारणों की समीक्षा की बात कही है। अपनी हार के बारे में उन्होने कहा कि, चुनाव में हार-जीत होती रहती है।

प्रदेश वनमंत्री नागरसिंह चौहान ने अपनी पत्नी की चुनाव में बड़ी जीत के बाद कांतिलाल भूरिया और उनके पुत्र झाबुआ विधायक विक्रांत भूरिया पर निशाना साधते हुए कहा कि जनता ने उन्हे सबक सिखाया है।

जल संसाधन विभाग की नाक के नीचे से बह गया करोड़ों रुपए का पानी

शरारती तत्वों ने मछली पकड़ने में व्यर्थ बहा दिया 40 करोड़ लीटर पानी

माही की गूंज, झाबुआ।

यह गर्मी का समय है और जून माह चल रहा है। सूरज की तपीस आग उगल रही है। भू-जल स्तर काफी नीचे पहुंच चुका है। तालाबों में भी पानी कम ही बचा है। ऐसे में जिला मुख्यालय पर एक ऐसी घटना सामने आई है जिसने जलसंसाधन विभाग के उदासीन रवैये को सबके सामने लाकर खड़ा कर दिया है। विभाग की नाक के नीचे से करोड़ों लीटर पानी व्यर्थ ही बहा दिया गया और विभाग को इसकी खबर तक नहीं लगी। इस घटना को देखने, सुनने वाले हैरान है कि आखिर ऐसा कैसे हो सकता है।

मामला जिला मुख्यालय से लगे जल संसाधन विभाग के रंगपुरा बैराज का है। रविवार रात तक जो बैराज लबालब भरा हुआ था वह सोमवार सुबह खाली नजर आया। बैराज खाली होते ही यहां मछली पकड़ने वालों का मेला सा लग गया। बताया जाता है कि, कुछ शरारती तत्वों ने बैराज के गेट खोल दिए और बैराज का पानी व्यर्थ ही बह गया। मामले की शिकायत लेकर कुछ किसान पुलिस के पास पहुंचे लेकिन उनकी कोई सुनवाई यहां नहीं हुई। जब प्रशासन के समक्ष मामला पहुंचा तो अज्ञात के खिलाफ मामला दर्ज करवाया गया। किसानों की शिकायत के पहले ना तो प्रशासन को इसकी खबर लगी और ना ही जिम्मेदार जल संसाधन विभाग को कुछ मामूल हुआ। नतीजा यह निकलकर सामने आया की 40 करोड़ लीटर पानी व्यर्थ बह गया जिसकी कीमत भी करोड़ों रूपये बताई जा रही है।

विभागीय सुत्रों के अनुसार रंगपुरा बैराज में करीब 0.72 मिलियन क्यूबिक मीटर यानी 72 करोड़ लीटर पानी भरा था। इस बैराज में 5 गेट है जिसमें से अज्ञात शरारतियों ने 3 गेट पूरी तरह से खोल दिए जिससे 40 करोड़ लीटर पानी व्यर्थ बह गया। सूचना मिलने पर ग्रामीणों की मदद से गेट बंद करवाए गए जिससे बैराज में केवल 32 करोड़ लीटर पानी ही बच पाया।

बैराज से 40 करोड़ लीटर पानी व्यर्थ बहा दिया गया। यह इतना पानी था कि जिससे पूरे शहर को चार महीने तक पानी उपलब्ध कराया जा सकता था। बैराज से माधौपुरा, रंगपुरा, धन्ना डूंगरा और डूंगरा लालू के ग्रामीण सिंचाई करते है। उनके मवेशियों के लिए भी पानी यहीं से मिलता था। मगर अब बैराज में मवेशियों के लिए पानी भी बहुत कम मात्रा में बचा है। अभी मानसून को आने में देरी है और इस सूरत में मवेशियों के लिए प्यास बुझाना भी मुश्किल हो जाएगा। ग्रामीणों के अनुसार पिछले दो-तीन वर्षों से ऐसा हो रहा है। मछली पकड़ने वाले बैराज के गेट खोल देते है। इस बार गेट खुले देखे तो ग्रामीण थाने पर गए लेकिन टालमटोल कर उन्हे थाने से रवाना कर दिया गया।

व्यर्थ बहे पानी की कीमत का अंदाजा इस तरह लगाया जा सकता है कि, अगर बाजार में 20 लीटर पानी की केन का मुल्य 30 रूपये है तो इस हिसाब से प्रति लीटर पानी का दाम डेढ़ रूपये होता है। तो 40 करोड़ लीटर व्यर्थ बहे पानी की कीमत लगभग 60 करोड़ हो जाती है। अगर पानी की गुणवत्ता के हिसाब से भी इसमें कटौती की जाए तब भी इस व्यर्थ बहे पानी की कीमत करोड़ों में ही होगी। यानि कुल मिलाकर यह करोड़ों रूपये की क्षति है।

ग्रामीणों के अनुसार बैराज से व्यर्थ पानी बहाने का यह क्रम पिछले दो-तीन सालों से चल रहा है और इसकी जानकारी जलसंसाधन विभाग को नहीं है। इसका मतलब यह है कि जलसंसाधन विभाग आंखें मूंद कर बैठा है और हर साल करोड़ों लीटर पानी व्यर्थ बह रहा है। कीमत के हिसाब से अगर देखा जाए तो पिछले तीन साल में विभाग ने करीब 1 अरब रूपये का पानी व्यर्थ गवां दिया। विभाग की लापरवाही से यह नुकसान करोड़ों का न होकर अरबों में पहुंच चुका है।

हालांकि रंगपुरा बैराज से व्यर्थ बहा पानी यहां से 4 किलो मीटर दूर स्थित नरवलिया बैराज पर पहुंच गया। चूंकि यहां गेट लगे थे। ऐसे में रंगपुरा बैराज से व्यर्थ बहा पानी यहां आकर स्टोर हो गया। मगर झाबुआ शहर के लिए तो यह एक बड़ा नुकसान ही माना जाएगा। इस पूरे घटना क्रम में जितने दोशी शरारती तत्व है उतना ही दोशी जलसंसाधन विभाग भी है, जो पिछले तीन सालों से घट रहे घटना क्रम को कुंभकर्णी नींद सोए होने के कारण देख नहीं पाया।

की जा रही थी चोरों की रेकी पर चोर की जगह पकड़ा गया कथित प्रेमी

कथित प्रेमी निकला रावटी में गैस एजेंसी पर कार्य करने वाला विनोद जाट

माही की गूंज, थांदला।

प्रेम का अर्थ त्याग होता है, लेकिन असल में वर्तमान स्थितियों में इस प्रेम रूपी शब्द को परिवर्तित कर प्रेम शब्द को वासना का एक अभिप्राय शब्द बना दिया है। नतीजन कई ऐसी घटनाएं सामने आती है जिसमें आमजन के लिए वह घटना हास्यास्पद होती है तो असल में वह घटना हमारे समाज में विश्वास का हनन करती है।

ऐसा ही विश्वास का हनन करते हुए एक घटना सामने आते हुए प्रेम शब्द को वासना से जोड एक कथित प्रेमी पकड़ाने के बाद सामने आया है। मामला थांदला थाने की एक पुलिस चौकी क्षेत्र का है, जहां चोरों ने छोटी-बड़ी चोरिया कर अपना उत्पात मचा रखा है। उक्त ग्राम में पुलिस की निष्क्रियता के चलते ग्रामवासी इस जुगत में है कि, ग्राम में चोरी करने आने वाले चोरों को रंगे हाथ ग्रामवासी की सक्रियता के साथ पकड़ा जाए। उसी के मद्देनजर शुक्रवार-शनिवार की रात्रि में एक मोहल्ले में, जिस मोहल्ले में भेरुजी विराजित है उस मोहल्ले के रहवासी रात में चोरों को पकड़ने के लिए रेकी कर रहे थे कि, मोहल्ले वासियों को एक घर के आगे उल्टे चप्पल रखे हुए दिखाई दिए। जिस पर रहवासियों को लगा कि, इस घर में चोर घुसे हैं। जिसके तहत पुलिस को सूचना देकर बुलाया और उल्टे चप्पल रखे उस घर को पूरा तलाश करते हुए छत तक चले गए लेकिन वहां पर कोई चोर नहीं था। इसी बीच पुलिस व रहवासियों के बीच संदेह की स्थिति बनी कि, बिना चोर के पुलिस को बुलाकर परेशान करने का प्रयास मोहल्ले वासियों ने किया। लेकिन मोहल्लेवासी द्वारा जो रेकी की जा रही थी जिसमें बाहरी व्यक्ति को देखा जरूर गया था और वह बाहरी व्यक्ति कोई और नहीं चोर ही था मोहल्लेवासी मान रहे थे। ऐसे में मोहल्ले वासियों ने पुलिस से कहा हमने बाहरी व्यक्ति को देखा है और वह चोर ही होंगे, हो सकता है। मोहल्ले के दूसरे घर में वह चोर घुसे होंगे कंहा। जिसके बाद मोहल्लेवासी पुलिस के साथ मोहल्ले के अन्य घर के बाहर की वस्तु स्थिति देखने पर, एक घर का दरवाजा थोड़ा खुला हुआ देखा तो मोहल्ले वासियों के साथ पुलिस इस घर में घुसी तो एक व्यक्ति घर के अंदर भागता हुआ दिखा। जिसे मोहल्ले वासियों के साथ पुलिस ने उक्त अनजान व्यक्ति को चोर समझ कर पंचायती करने के साथ चौकी तक ले गए। दूसरे दिन सुबह पुलिस को पूछताछ में चोर की तरह घर में घुसा व्यक्ति ने अपना नाम विनोद पिता पूनमचंद जाट निवासी रावटी जिला रतलाम का निवासी बताया। पुलिस ने उक्त व्यक्ति के पास से वह संसाधन भी मिले जो शारीरिक संबंध बनाते समय सुरक्षा के लिए होते हैं।

पुलिस को व्यक्ति ने बताया, मैं चोर नहीं हूं और अपने आप को सभ्य परिवार की महिला के साथ कथित प्रेम होना बताया। उक्त बात सुन पुलिस भी हतप्रद हो गई और जैसे ही दबी-दबाई जुबान से यह बात बाजार में गई तो यहा चोर की बात की जगह हास्यास्पद बात के रूप में लोग लेने लगे। लेकिन असल में उक्त कथित प्रेमी ने हमारे समाज की मर्यादा का हनन किया और प्रेम नाम को त्याग के स्थान पर वासना का नाम देकर विश्वास का भी हनन किया है। कथित प्रेमी ने पुलिस से उम्मिद कर यह भी प्रयास किया की इस मामले को चोरी करने आए के रूप में ही लेकर उसके विरूद्ध चोरी का मामला दर्ज कर मामले को खत्म कर दिया जाए, पर कथित प्रेमी का यह प्रयास सफल नही हुआ।

गूंज ने इस कथित प्रेमी के संबंध में जानकारी निकाली तो सामने आया कि, विनोद पिता पूनमचंद जाट निवासी रावटी उम्र करीब 28 वर्ष का होकर रावटी में एक गैस एजेंसी पर कर्मचारी है। उक्त कर्मचारी विनोद गैस टंकी का टोकन लेने-देने के कार्य के साथ घरों में गैस टंकी देने जाता है, इसी कार्य के चलते विनोद ग्राम के सभ्य परिवार की महिला के साथ आंख मिचौली खेलने का प्रयास भी करता है। उसी का एक नतीजा यह था कि, विनोद थांदला थाना के चौकी क्षेत्र के इस गांव तक रात में एक सभ्य परिवार के घर वासना की भूख मिटाने इस गांव तक पहुंच गया। वही चोरी की रेकी करने पर कथित उक्त प्रेमी, पुलिस व मोहल्लेवासियो के हत्थे चढ़ गया। पुलिस ने महिला की रिपोर्ट पर धारा 354, 427, व 151 के तहत मामला दर्ज कर न्यायालय में पेश किया।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, अलका भटेवरा द्वारा काम्पेक प्रिन्टर्स प्रायवेट लिमिटेड, 3/54, प्रेस कॉम्प्लेक्स, ए. बी. रोड, इंदौर से मुद्रित एवं 499, बाजना मार्ग, गणेश मंदिर के सामने, खवासा, तहसील थांदला, जिला-झाबुआ (म.प्र.) से प्रकाशित। प्रधान संपादक- संजय भटेवरा। मोबाइल नं. -95898-82798 (सभी विवादों का न्यायालय क्षेत्र झाबुआ रहेगा) आरएनआई नंबर- एमपीएचआईएन/2018/76422